कमल संदेश
ikf{kd if=dk

**संपादक**

**प्रभात झा, सांसद**

**कार्यकारी संपादक**

**डॉ. शिव शक्ति बक्सी**

**सहायक संपादक**

**संजीव कुमार सिन्हा**

**संपादक मंडल सदस्य**

**सत्यपाल**

**कला संपादक**

**धर्मेन्द्र कौशल**
**विकास सैनी**

**सदस्यता शुल्क**

**वार्षिक : 100/-**
**त्रि वार्षिक : 250/-**

**संपर्क**

InL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QDI : +91(11) 23387887

**पता :** डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

**ई–मेल**

kamalsandesh@yahoo.co.in

**प्रकाशक एवं मुद्रक :** डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

# विषय–सूची

**प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का अमेरिका दौरा**

''हमें देशों के बीच सार्थक संवाद एवं सहयोग सुनिश्चित करना है''..... 7
संयुक्त प्रेस वक्तव्य..... 9
प्रधानमंत्री की अमेरिका यात्रा के दौरान जारी साझा वक्तव्य..... 13

**अन्य**

रेडियो पर देश को संबोधन : मन की बात..... 19
प्रधानमंत्री ने की 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरुआत..... 22
'मेक इन इंडिया' पहल की शुरुआत..... 24

**विधानसभा चुनाव पर विशेष**

महाराष्ट्र..... 25
हरियाणा..... 27

*कमल संदेश के सभी सुधी पाठकों को*
*दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं*

बोध कथा

# पीड़ितों का वकील

यह उन दिनों की कथा है, जब देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद पटना हाईकोर्ट में वकालत करते थे। वह अपनी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के लिए विख्यात थे। वह हमेशा पीड़ितों, वंचितों के पक्ष में खड़े होते थे और उन्हें न्याय दिलाने का भरपूर प्रयास करते थे। अपने इस सिद्धांत के चलते वह लाखों रुपये फीस के प्रस्ताव भी आसानी से ठुकरा देते थे। एक बार विख्यात समाज सुधारक भवानीलाल संन्यासी का सिफारिशी पत्र लेकर एक व्यक्ति उनके पास आया।

उसका अपनी किसी निकट संबंधी विधवा महिला से संपत्ति को लेकर विवाद चल रहा था। वह राजेंद्र बाबू को अपना वकील बनाना चाहता था। राजेंद्र बाबू ने उसके कागजात देखे तथा गंभीर होकर बोले, 'कागज देखकर मैं समझ गया हूं कि इस संपत्ति के असली मालिक तुम नहीं,वह विधवा महिला है। तुमने इतनी चालाकी से कागज तैयार किए हैं कि कानूनी दृष्टि से तुम इसके हकदार बन सकते हो। पर एक विधवा महिला की आह तुम्हारे लिए बहुत घातक सिद्ध हो सकती है। मैं एक विधवा महिला का हक छीनने में तुम्हारी मदद बिल्कुल नहीं कर सकता। यह मेरे सिद्धांत के खिलाफ बात होगी। इसीलिए मेरा सुझाव यह है कि तुम उस बेचारी की संपत्ति हजम करने के पाप से बचो। किसी की धन-संपत्ति हथियाने से व्यक्ति कभी भी सुख-शांति नहीं पा सकता।'

राजेंद्र बाबू की बात सुनकर उसका हृदय बदल गया तथा उसने उनके सामने ही वे कागज फाड़कर फेंक दिए। इस तरह से राजेंद्र बाबू लोगों का विचार बदल देते थे और कई बार मामला न्यायिक प्रक्रिया में जाने से पहले ही सुलझ जाता था। उनसे प्रभावित होकर कई लोग देश सेवा के रास्ते पर चले आए थे।

**संकलन : पूर्णिमा अग्रवाल**

(नवभारत टाइम्स से साभार)

**पाथेय**

## चारित्र्य का संकट व उसकी उपायोजना

**कई वर्षों पहले हमने सुना था कि अपने देश में चारित्र्य का संकट उत्पन्न हो गया है। इसे 'क्राइसिस ऑफ करेक्टर' कहते हैं। परन्तु उसके निर्माण का कोई कार्य नहीं करता। हमने सर्वसामान्य व्यक्ति से यह आशा की है कि वह चरित्रवान गुणवान और स्वार्थशून्य बने। शायद इसीलिए छोटे-मोटे भ्रष्टाचार करने पर उसके लिए दण्ड की व्यवस्था भी की गई, लेकिन जहां बहुत बड़े-बड़े घपले हो रहे हैं, उस ओर कोई देखता भी नहीं। यह बिल्कुल विपरीत बात है।**

**– माधव सदाशिव गोलवलकर (श्रीगुरुजी)**

# स्वच्छता अभियान
# महात्मा गांधी को सच्ची श्रद्धांजलि

महात्मा गांधी का जन्मदिवस प्रतिवर्ष 2 अक्तूबर को देश की पूरी जनता गांधी जयंती के रूप में मनाती रही है। परन्तु इस वर्ष विशेष था। इस दिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छता अभियान के रूप में इसकी शुरूआत की। यह एक ऐसा आंदोलन है जिससे भारत स्वच्छ तथा सुंदर बनाया जा सके। वैसे भी स्वच्छता महात्मा गांधी का प्रिय विषय रहा है और उन्होंने व्यक्तिश: अपने जीवन को स्वच्छ और स्वास्थकारी जीवन बनाने पर बहुत बल दिया था। यह अभियान महात्मा गांधी के सपनों को साकार करने के लिए आरम्भ हुआ है और इसका उद्देश्य 2019 तक भारत को स्वच्छ बनाना है, जब उस वर्ष भारत महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती मना रहा होगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अभी पिछली रात ही अमेरीका की अत्यंत सफल यात्रा से लौटे थे और उन्होंने जरा सा भी समय गंवाए बिना नई दिल्ली में गांधी जयन्ती पर इस महत्वाकांक्षी 'स्वच्छ भारत मिशन' की शुरूआत कर दी। इस कार्यक्रम का उमंग और उत्साह इसी बात से प्रमाणित होता है कि इसमें लोगों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया जिनमें विद्यार्थी, सरकारी कर्मचारी, कार्पोरेट जगत, महान दिग्गज और विभिन्न वर्ग के लोग सक्रिय रूप से शामिल हुए। पिछले वर्षों के विपरीत, जिनमें गांधी जयन्ती अधिकांशत: एक सरकारी रीति-रिवाज सी बनकर उस दिन अवकाश भर तक सीमित रहती थी, इस वर्ष सरकारी अधिकारी और कर्मचारियों अपने कार्यालय पहुंच, स्वच्छता की शपथ ली और उन्होंने अपने कार्यस्थल और आसपास के स्थानों को साफ सुथरा बनाया। यह लगा कि इस अभियान ने जन-आंदोलन का रूप ले लिया है जिसमें लोग इस अभियान से जुड़े और इस बात से प्रेरित हुए जब स्वयं प्रधानमंत्री ने अपने हाथों में झाड़ू लेकर वाल्मीकि मन्दिर से स्वच्छता अभियान की शुरूआत की, जहां महात्मा गांधी दिल्ली आने पर ठहरा करते थे। उन्होंने अचानक ही जब मन्दिर मार्ग पुलिस थाने का दौरा किया और वहां झाड़ू लेकर साफ-सफाई की तो आम आदमियों के साथ-साथ पुलिसमैन भी इस अभियान में शामिल हो गए। स्कूलों से लेकर कॉलेजों तक, सरकारी कार्यालयों से लेकर आम जगहों तक, गलियों से लेकर शौचालयों तक, सभी जगह इस अभियान का प्रभाव दिखाई पड़ा और किसी ने यह बात ठीक ही कही है कि इससे पहले दिल्ली को इतना साफ और सुन्दर कभी नहीं देखा।

स्वच्छता अभियान सचमुच एक ऐसा प्रयास है जिससे विकसित और वैभवशाली भारत की नींव पड़ना शुरू हो गई है। स्वच्छता से अच्छा स्वास्थ्य, अच्छा पर्यावरण, अच्छी आदतें, सुन्दर वातावरण बनता है और यह एक ऐसी मानसिकता का द्योतक है जिससे चुनौतियां स्वीकार करने की प्रेरणा मिलती है। यह व्यक्ति को सामर्थ्यवान और शक्तिशाली बनाता है। मोटे तौर पर यह लोगों में नागरिक भाव (civil sense) को भरता है। अत: प्रधानमंत्री ने इस बात पर बल दिया है कि स्वच्छता अभियान को केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं बनाकर रख देना चाहिए, बल्कि इसे जन-जन का कार्यक्रम बनाना होगा क्योंकि यह तभी सफल हो पाएगा जब हर आदमी यह महसूस करने लगे यह उसका स्वयं का उत्तरदायित्व है कि हम अपने वातावरण को स्वच्छ रखें। यह प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य बन जाना चाहिए तभी यह जन अभियान का रूप ले पाएगा। लोगों ने प्रधानमंत्री के आह्वान को जबरदस्त ढंग से स्वीकार किया है। अब यह समय की मांग है कि भारत को स्वच्छ रखने के लक्ष्य को प्राप्त करने का जोश और उत्साह कायम रखा जाए जिसके लिए लोगों के निरन्तर समर्थन एवं उत्प्रेरणा की आवश्यकता है।

मात्र पांच महीने की छोटी सी अवधि में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सरकार के पूरे कामकाज को नई दिशा प्रदान की है और सम्पूर्ण कार्य-संस्कृति को सुधारने का प्रयास किया गया है। नौकरशाही

की परेशानियों को दूर करने के लिए उन्होंने लालफीताशाही पर अंकुश लगाया है और पुराने पड़ चुके अनावश्यक कानूनों को समाप्त करने का प्रयास करते हुए जनता के साथ सम्बन्धों को जोड़ा है। ऐसी सभी महत्वाकांक्षी योजना को, चाहे वह प्रधानमंत्री जनधन योजना हो, 'मेक इन इण्डिया' अभियान या स्वच्छता अभियान, जो भी हो, उन्होंने इन सभी योजनाओं को लोगों से जोड़ने का ही प्रयास किया है। भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी, उन्होंने भारतवंशियों और पीआईओ को भारत की विकास परियोजनाओं में शामिल किया है। यह उन्हीं का विजन रहा है कि जिसके कारण जो 'सरकारी कार्यक्रम' दिखाई पड़ते थे, वे स्वच्छ भारत के लिए जन-प्रेरणा बन गए। नरेन्द्र मोदी ने गांधी जयन्ती को एक नया अर्थ दिया है, यह ऐसा दिन बन गया है जिससे हम भारत मां की सेवा में स्वयं को पुन: समर्पित कर सकते हैं। महात्मा गांधी, जिनकी मूर्तियां बनाकर उन्हें वहीं तक उनकी जयन्ती को सीमित कर दिया गया था, आज वे जन-जन तक पहुंच रहे हैं और उनके विचारों से राष्ट्र की समस्याएं सुलझाने में प्रेरणा मिलने लगी है। अब हर वर्ष गांधी जयन्ती हमारे लिए स्वच्छ भारत के लक्ष्य की प्राप्ति को हमें स्मरण कराती रहेगी जब हम महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती मना रहे होंगे तब तक पूरा भारत स्वच्छ एवं सुंदर होकर हमारे सामने रहेगा। यही उनकी स्मृति में हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।■

# 'हमारे अंतरिक्ष वैज्ञानिकों पर गर्व'

## *प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 'मंगलयान' को मंगल की कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित करने के ऐतिहासिक क्षण के गवाह बने*

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मंगल ग्रह की कक्षा में मंगलयान को सफलतापूर्वक स्थापित करने पर अंतरिक्ष वैज्ञानिकों को बधाई दी है। प्रधानमंत्री बंगलौर स्थित भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में मंगल की कक्षा में मंगलयान को स्थापित करने संबंधी कार्यक्रम को देखने के उपरांत वैज्ञानिकों को संबोधित कर रहे थे। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि पहले ही प्रयास में मंगल में पहुंचकर भारतीय वैज्ञानिकों ने इतिहास रच दिया है। भारत अपने पहले ही प्रयास में ऐसी सफलता प्राप्त करने वाला पहला देश बन गया है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारतीय वैज्ञानिकों ने अपने कठिन परिश्रम और लगन के द्वारा मानवीय उद्यमता और कल्पना शक्ति की नई सीमाओं को छुआ है। उन्होंने इस अभियान को संपूर्ण भारत का स्वदेशी प्रयास बताते हुए कहा कि इसमें बंगलौर से भुवनेश्वर और फरीदाबाद से राजकोट तक के लोगों के प्रयास शामिल है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने वैज्ञानिकों की प्रशंसा करते हुए कहा कि कुछ करने की प्रबल इच्छा और कुछ नया खोजने में खुशी के प्रयास शक्तिहीन लोगों के लिए नहीं है। उन्होंने कहा कि अभियान में मिलने वाली सफलता या असफलता पर ध्यान दिए बिना उन्होंने आज इसरो में उपस्थित रहने को चुना। उन्होंने वैज्ञानिकों से स्वयं के लिए और भी अधिक चुनौतीपूर्ण लक्ष्य रखने का अनुरोध किया और कहा उन्हें विश्वास है कि वे इन लक्ष्यों को भी प्राप्त कर लेंगे। आप लोगों को 'असंभव को संभव' बनाने की आदत बन गई है। उन्होंने कहा कि आधुनिक भारत अपनी जगतगुरू भारत की भूमिका को निरंतर निभाता रहेगा। श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि अंतरिक्ष कार्यक्रमों की सफलता इस बात का प्रकाशमान प्रतीक है कि हम एक राष्ट्र के रूप में क्या कुछ करने की सामर्थ्य रखते है। एक सफल अंतरिक्ष कार्यक्रम कई क्षेत्रों में अनेक अनुप्रयोग की शुरूआत करता है। हमारे अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के प्रयास हमारी शासन प्रणाली को मजबूत, अर्थव्यवस्था को सशक्त और हमारी जीवन शैली को उन्नत बना रहा है। उन्होंने कहा कि हमारा देश क्रिकेट टीम के एक स्पर्धा जीतने पर खुशियां मनाता है और आज की सफलता उससे हजार गुणा बढ़ी है और सभी देशवासियों को हमारे अंतरिक्ष वैज्ञानिकों की सफलता पर खुशियां मनानी चाहिए। आइये, हमारे वैज्ञानिकों की इस उपलब्धि पर मिल-जुलकर खुशी मनाये और प्रत्येक स्कूल और कॉलेज के छात्र उनके प्रयासों की सामूहिक सराहना करें।

इस अवसर पर कर्नाटक के राज्यपाल श्री राजूभाई वाला, मुख्यमंत्री श्री सिद्धरमैया और केंद्रीय मंत्री श्री अनंत कुमार और श्री सदानंद गौड़ा भी उपस्थित थे। ■

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का अमेरिका दौरा

# ''हमें देशों के बीच सार्थक संवाद एवं सहयोग सुनिश्चित करना है''

*भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का अमेरिका दौरा बहुचर्चित और शानदार उपलब्धियों वाला रहा। गत 26 से 30 सितंबर तक अपने पांच दिवसीय प्रवास में श्री मोदी ने संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिकारियों, अमेरिकी राजनयिकों, उद्योगपतियों एवं प्रवासी भारतीयों से बातचीत की और विभिन्न मंचों पर भारत की साख और धाक को मजबूत किया। प्रधानमंत्री की अमेरिका यात्रा के दौरान अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा के साथ संयुक्त प्रेस वक्तव्य एवं साझा वक्तव्य जारी किया गया। प्रधानमंत्री ने न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र के महासचिव से मुलाकात की और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इस्राइल के प्रधानमंत्री श्री बेन्यामिन नेतन्याहू से मुलाकात की। इसके साथ ही श्री मोदी ने यू. एस.-इंडिया बिजनेस काउन्सिल, अमेरिकी उपराष्ट्रपति जो बायडन और अमेरिकी सेक्रेटरी ऑफ स्टेट जॉन कैरी द्वारा आयोजित भोज के अवसर पर, न्यूयॉर्क में 'विदेशी मामलों की परिषद' एवं न्यूयार्क के मेडिसन स्क्वायर गार्डन में भारतीय समुदाय को संबोधित किया। उक्त सभी अवसरों पर श्री मोदी ने अद्भुत, ऐतिहासिक और अविस्मरणीय भाषण दिया। अपने विचारों से उन्होंने दुनियाभर में एक अमिट छाप छोड़ी। हम यहां उनके कुछ प्रमुख भाषण प्रकाशित कर रहे हैं :*

**संयुक्त राष्ट्र महासभा के 69वें सत्र की सामान्य चर्चा के दौरान, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए भाषण का मूल पाठ :**

**विशिष्ट अतिथिगण और मित्रो**

सर्वप्रथम मैं संयुक्त राष्ट्र महासभा के 69वें सत्र के अध्यक्ष चुने जाने पर आपको हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। भारत के प्रधानमंत्री के रूप में पहली बार आप सबको संबोधित करना मेरे लिए अत्यंत सम्मान की बात है। मैं भारतवासियों की आशाओं एवं अपेक्षाओं से अभिभूत हूं। उसी प्रकार मुझे इस बात का पूरा भान है कि विश्व को 1.25 बिलियन लोगों से क्या अपेक्षाएं हैं। भारत वह देश है, जहां मानवता का छठवां हिस्सा आबाद है। भारत ऐसे व्यापक पैमाने पर आर्थिक व सामाजिक बदलाव से गुजर रहा है, जिसका उदाहरण इतिहास में दुर्लभ है।

प्रत्येक राष्ट्र की, विश्व की अवधारणा उसकी सभ्यता एवं धार्मिक परंपरा के आधार पर निरूपित होती है। भारत चिरंतन विवेक समस्त विश्व को एक कुटंब के रूप में देखता है। और जब मैं यह बात कहता हूं तो मैं यह साफ करता हूं कि हर देश की अपनी एक philosophy होती है। मैं ideology के संबंध में नहीं कह रहा हूं। और देश उस फिलोस्फी की प्रेरणा से आगे बढ़ता है। भारत एक देश है, जिसकी वेदकाल से वसुधैव कुंटुम्बकम परंपरा रही है। भारत एक देश है, जहां प्रकृति के साथ संवाद, प्रकृति के साथ कभी संघर्ष नहीं ये भारत के जीवन का हिस्सा है और इसका कारण उस philosophy के तहत, भारत उस जीवन दर्शन के तहत, आगे बढ़ता रहता है। प्रत्येक राष्ट्र की, विश्व अवधारणा

उसकी सभ्यता और उसकी दार्शनिक परंपरा के आधार पर निरूपित होती है। भारत का चिरंतन विवेक समस्त विश्व को, जैसा मैंने कहा – वसुधैव कुटुंबमकम – एक कुटुम्ब के रूप में देखता है। भारत एक ऐसा राष्ट्र है, जो केवल अपने लिए नहीं, बल्कि विश्व पर्यत न्याय, गरिमा, अवसर और समृद्धि के हक में आवाज उठाता रहा है। अपनी विचारधारा के कारण हमारा multi-literalism में दृढ़ विश्वास है।

आज यहां खड़े होकर मैं इस महासभा पर एक टिकी हुई आशाओं एवं अपेक्षाओं के प्रति पूर्णतया सजग हूं। जिस पवित्र विश्वास ने हमें एकजुट किया है, मैं उससे अत्यंत प्रभावित हूं। बड़े महान सिद्धांतों और दृष्टिकोण के आधार पर हमने इस संस्था की स्थापना की थी। इस विश्वास के आधार पर कि अगर हमारे भविष्य जुड़े हुए हैं तो शांति, सुरक्षा, मानवाधिकार और वैश्विक आर्थिक विकास के लिए हमें साथ मिल कर काम करना होगा। तब हम 51 देश थे और आज 193 देश के झंडे इस बिल्डिंग पर लहरा रहे हैं। हर नया देश इसी विश्वास और उम्मीद के आधार पर यहां प्रवेश करता है। हम पिछले 7 दशकों में बहुत कुछ हासिल कर सके हैं। कई लड़ाइयों को समाप्त किया है। शांति कायम रखी है। कई जगह आर्थिक विकास में मदद की है। गरीब बच्चों के भविष्य को बनाने में मदद दी है। भुखमरी हटाने में योगदान दिया है। और इस धरती को बचाने के लिए भी हम सब साथ मिल कर के जुटे हुए हैं।

69 UN Peacekeeping मिशन में विश्व में blue helmet को शांति के एक रंग की एक पहचान दी है। आज समस्त विश्व में लोकतंत्र की एक लहर है।

अफगानिस्तान में शांतिपूर्वक राजनीतिक परिवर्तन यह भी दिखलाता है कि अफगान जनता की शांति की कामना हिंसा पर विजय अवश्य पाएगी। नेपाल युद्ध से शांति और लोकतंत्र की ओर आगे बढ़ा है। भूटान के नए लोकतंत्र में एक नई ताकत नजर आ रही है। पश्चिम एशिया एवं उत्तर अफ्रीका में लोकतंत्र के पक्ष में आवाज उठाए जाने के प्रयास हो रहे हैं। Tunisia की सफलता दिखा रही है कि लोकतंत्र की ये यात्रा संभव है।

अफ्रीका में स्थिरता, शांति और प्रगति हेतु एक नई ऊर्जा एवं जागृति दिखायी दे रही है।

हमें एशिया और उसके पूरे अभूतपूर्व समृद्धि का अभ्युदय देखा है। जिसके आधार में शांति एवं स्थिरता की शक्ति समाहित है। अपार संभावनाओं से समृद्ध महादेश लैटिन अमेरिका स्थिरता एवं समृद्धि के साझा प्रयास में एकजुट हो रहा है। यह महादेश विश्व समुदायों के लिए एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ सिद्ध हो सकता है।

भारत अपनी प्रगति के लिए एक शांतिपूर्ण एवं स्थिर अंतरराष्ट्रीय वातावरण की अपेक्षा करता है। हमारा भविष्य हमारे पड़ोस से जुड़ा हुआ है। इसी कारण मेरी सरकार ने पहले ही दिन से पड़ोसी देशों से मित्रता और सहयोग बढ़ाने पर पूरी प्राथमिकता दी है। और पाकिस्तान के प्रति भी मेरी यही नीति है। मैं पाकिस्तान से मित्रता और सहयोग बढ़ाने के लिए गंभीरता से शांतिपूर्ण वातवारण में बिना आतंक के साये के साथ द्विपक्षीय वार्ता करना चाहते हैं। लेकिन पाकिस्तान का भी यह दायित्व है कि उपयुक्त वातावरण बनाये और गंभीरता से द्विपक्षीय बातचीत के लिए सामने आये।

इसी मंच पर बात उठाने से समाधान के प्रयास कितने सफल होंगे, इस पर कइयों को शक है। आज हमें बाढ़ से पीड़ित कश्मीर में लोगों की सहायता देने पर ध्यान देना चाहिए, जो हमने भारत में बड़े पैमाने पर आयोजित किया है। इसके लिए सिर्फ भारत में कश्मीर, उसी का ख्याल रखने पर रूके नहीं हैं, हमने पाकिस्तान को भी कहा, क्योंकि उसके क्षेत्र में भी बाढ़ का असर था। हमने उनको कहा कि जिस प्रकार से हम कश्मीर में बाढ़ पीड़ितों की सेवा कर रहे हैं, हम पाकिस्तान में भी उन बाढ़ पीड़ितों की सेवा करने के लिए हमने सामने से प्रस्ताव रखा था।

हम विकासशील विश्व का हिस्सा हैं, लेकिन हम अपने

सीमित संसाधनों को उन सभी के साथ साझा करने की छूट दें, जिन्हें इनकी नितांत आवश्यकता है।

दूसरी ओर आज विश्व बड़े स्तर के तनाव और उथल-पुथल की स्थितियों से गुजर रहा है। बड़े युद्ध नहीं हो रहे हैं, परंतु तनाव एवं संघर्ष भरपूर नजर आ रहा है, बहुतेरे हैं, शांति का अभाव है तथा भविष्य के प्रति अनिश्चितता है। आज भी व्यापक रूप से गरीबी फैली हुई है। एक होता हुआ एशिया प्रशांत क्षेत्र अभी भी समुद्र में अपनी सुरक्षा, जो कि इसके भविष्य के लिए आधारभूत महत्व रखती है, को लेकर बहुत चिंतित है।

यूरोप के सम्मुख नए वीजा विभाजन का खतरा मंडरा रहा है। पश्चिम एशिया में विभाजक रेखाएं और आतंकवाद बढ़ रहे हैं। हमारे अपने क्षेत्र में आतंकवादी स्थिरतावादी खतरे से जूझना जारी है। हम पिछले चार दशक से इस संकट को झेल रहे हैं। आतंकवाद चार नए नए रूप और नाम से प्रकट होता जा रहा है। इसके खतरे से छोटा या बड़ा, उत्तर में हो या दक्षिण में, पूरब में हो या पश्चिम में, कोई भी देश मुक्त नहीं है।

मुझे याद है, जब मैं 20 साल पहले विश्व के कुछ नेताओं से मिलता था और आतंकवाद की चर्चा करता था, तो उनके यह बात गले नहीं उतरती थी। वह कहते थे कि यह law and order problem है। लेकिन आज धीरे धीरे आज पूरा विश्व देख रहा है कि आज आतंकवाद किस प्रकार के फैलाव को पाता चला जा रहा है। परंतु क्या हम वाकई इन ताकतों से निपटने के लिए सम्मिलित रूप से ठोस अंतरराष्ट्रीय प्रयास कर रहे हैं और मैं मानता हूं कि यह सवाल बहुत गंभीर है। आज भी कई देश आतंकवादियों को अपने क्षेत्र में पनाह दे रहे हैं और आतंकवादियों को अपनी नीति का उपकरण मानते हैं और जब good terrorism and bad terrorism, ये बातें सुनने को मिलती है, तब तो आतंकवाद के खिलाफ लड़ने की हमारी निष्ठाओं पर भी

# ''भारत-अमेरिका के आर्थिक संबंधों में तीव्र गति से विस्तार होगा''

## *प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा के साथ संयुक्त प्रेस वक्तव्य के दौरान दी गयी टिप्पणी का मूल पाठ*

सबसे पहले, मैं प्रेसिडेंट ओबामा के निमंत्रण और उनके गर्मजोशी से भरे स्वागत और आदर सत्कार के लिए मैं उनका आभार प्रकट करना चाहता हूँ।

पदभार ग्रहण करने के कुछ ही महीनों के अंदर, अमरीका आकर प्रेसिडेंट ओबामा से मिलकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई है।

यह खुशी की बात है कि दोनों देशों के मिशनों के मार्स पहुंचने के कुछ ही दिनों के भीतर हम आज यहां मिल रहे हैं। भारत और अमरीका के बीच मार्स पर Summit के बाद, अब यह Summit धरती पर हो रहा है। यह शुभ संयोग हमारे संबंधों की क्षमता का प्रतिबिम्ब है।

इस यात्रा के दौरान, खासकर President Obama से हुई बातचीत से, मेरा विश्वास और दृढ़ हो गया है कि भारत और अमेरिका के बीच वैश्विक Partnership होना स्वाभाविक है। जो हमारे जुड़े हुए मूल्यों, हितों और digital age में हमारी क्षमताओं पर आधारित हैं।

President Obama और मैंने अपनी सहज आर्थिक प्राथमिकताओं के बारे में विस्तार से चर्चा की।

मेरा विश्वास है कि निकट भविष्य में भारत का एक बड़े पैमाने पर आर्थिक विकास और परिवर्तन होगा। भारत में हम Policy ओर Process दोनों को बदलने पर बल दे रहें हैं, जिससे भारत के साथ Business करना सहज और लाभदायक होगा। भारत में आर्थिक अवसर तेजी से बढ़ रहे हैं। मुझे विश्वास है कि भारत-अमेरिका के आर्थिक संबंधों में तीव्र गति से विस्तार होगा।

मैंने President Obama से यह आग्रह किया है कि वह ऐसे कदम उठाएं जिससे भारत की Service कंपनियां US की market को आसानी से access कर सकें। हम दोनों Civil Nuclear Cooperation को आगे ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं और इससे जुड़े मुद्दों को जल्दी सुलझाने के प्रति गंभीर हैं। यह भारत की energy security के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

WTO के मुद्दों के ऊपर हमारी बड़ी खुलकर बातचीत हुई। भारत Trade facilitation का समर्थन करता है। परंतु मेरी यह भी अपेक्षा है कि ऐसा समाधान निकले जो हमारी Food Security की चिंताओं को भी दूर करे। मेरा विश्वास है कि यह जल्दी किया जा सकेगा।

Climate Change हम दोनों के लिए प्राथमिकता का विषय है। हमने तय किया है कि इस विषय पर आपसी संवाद व सहयोग बढ़ांएगे। ▸▸

सवालिया निशान खड़े होते हैं।

पश्चिम एशिया में आतंकवाद पाशविकता की वापसी तथा दूर एवं पास के क्षेत्र पर इसके प्रभाव को ध्यान में रखते हुए सम्मिलित कार्रवाई का स्वागत करते हैं। परंतु इसमें क्षेत्र के सभी देशों की भागीदारी और समर्थन अनिवार्य है। अगर हम terrorism से लड़ना चाहते हैं तो क्यों न सबकी भागीदारी हो, क्यों न सबका साथ हो और क्यों न उस बात पर आग्रह भी किया जाए। sea, space एवं cyber space साझा समृद्धि के साथ-साथ संघर्ष के रंगमंच भी बने हैं। जो समुद्र हमें जोड़ता था, उसी समुद्र से आज टकराव की खबरें शुरू हो रही हैं। जो स्पेस हमारी सिद्धियों का एक अवसर बनता था, जो सायबर हमें जोड़ता था, आज इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में नए संकट नजर आ रहे हैं।

उस अंतरराष्ट्रीय एकजुटता की, जिसके आधार पर संयुक्त राष्ट्र की स्थापना हुई, जितनी आवश्यकता आज है, उतनी पहले कभी नहीं थी। आज अब हम interdependent world कहते हैं तो क्या हमारी आपसी एकता बढ़ी है। हमें सोचने की जरूरत है। क्या कारण है कि UN जैसा इतना अच्छा प्लेटफार्म हमारे पास होने के बाद भी अनेक जी समूह बनाते चले गए हम। कभी G 4 होगा, कभी G 7 होगा, कभी G 20 होगा। हम बदलते रहते हैं और हम चाहें या न चाहें, हम भी उन समूहों में जुड़े हैं। भारत भी उसमें जुड़ा है।

लेकिन क्या आवश्यकता नहीं है कि हम G 1 से आगे बढ़ कर के G&All की तरफ कदम उठाएं। और जब UN अपने 70 वर्ष मनाने जा रहा है, तब ये G&All का atmosphere कैसे बनेगा। फिर एक बार यही मंच हमारी समस्याओं के समाधान का अवसर कैसे बन सके। इसकी विश्वसनीयता कैसे बढ़े, इसका सामर्थ्य कैसे बढ़े, तभी जा कर के यहां हम संयुक्त बात करते हैं। लेकिन टुकड़ों में बिखर जाते हैं, उसमें हम बच सकते हैं, एक तरफ तो हम यह कहते हैं कि हमारी नीतियां परस्पर जुड़ी हुई हैं और दूसरी तरफ हम जीरो संघ के नजरिये से सोचते हैं। अगर उसे लाभ होता है तो मेरी हानि होती है, कौन किसके लाभ में है, कौन किसके हानि में है, यह भी मानदंड के आधार पर हम आगे बढ़ते हैं।

निराशावादी या आलोचनावादी की तरह कुछ भी नहीं बदलने वाला है। एक बहुत बड़ा वर्ग है, जिसके मन में है कि छोड़ो यार, कुछ नहीं बदलने वाला है, अब कुछ होने वाला नहीं है। ये जो निराशावादी और आलोचनावादी माहौल है, यह कहना आसान है। परंतु अगर हम ऐसा करते हैं तो हम अपनी जिम्मेदारियों से भागने का जोखिम उठा रहे हैं। हम अपने सामूहिक भविष्य को खतरे में डाल रहे हैं। आइए, हम अपने समय की मांग के अनुरूप अपने आप को ढालें। हम वक्त की शांति के लिए कार्य करें।

कोई एक देश या कुछ देशों का समूह विश्व की धारा को तय नहीं कर सकता है। वास्तविक अन्तरराज्यीय होना, यह समय की मांग



▸▸ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उभर रही चुनौतियों को लेकर भी दोनों देशों के विचारों में समानता है। इसमें Asia Pacific क्षेत्र में शांति तथा स्थिरता भी शामिल हैं। अमरीका हमारी 'Look East and Link West' Policy का अभिन्न अंग है।

दक्षिण एशिया सहित पश्चिम एशिया और अन्य क्षेत्रों में पनप रहे आतंकवाद की चुनौतियों पर हमने विस्तार से विचार-विमर्श किया। हमने counter terrorism और intelligence में पारस्परिक सहयोग बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की।

अफगानिस्तान के लोगों ने हिंसा और आतंकवाद पर विजय पाने के अपने संकल्प का प्रदर्शन किया है। हम दोनों ने अफगानिस्तान को सहायता देते रहने की हमारी प्रतिबद्धता और इस क्षेत्र में अधिक coordination की आवश्यकता पर चर्चा की।

अफ्रीका में इबोला (Ebola) crisis को लेकर दोनों पक्षों में गहरी चिंता है। भारत ने इस crisis से निपटने और अन्य सहायता के लिए 12 million dollars की मदद देने का commitment किया है।

हमारे साझा हितों को ध्यान में रखकर हम अपने security dialogue और defence relations को और बढ़ाएंगे। मैं US Defence Companies को विशेषकर भारत की Defence manufacturing capacities के विकास में भाग लेने के लिए आमंत्रित करता हूं।

पिछले चार दिनों में मैंने भारत और भारत-अमेरिकी partnership के प्रति अमेरिका में अपार रुचि और उत्साह देखा है। वह हमारे पारस्परिक संबंधों से जुड़ी उनकी आशाओं और उत्साह का प्रमाण है। और यही हमारी शक्ति और प्रेरणा होगी। इन संबंधों को नई ऊर्जा और दृढ़ता के साथ एक नए स्तर पर ले जाने में।

मैंने President Obama तथा उनके परिवार को भारत आने का निमंत्रण दिया है। मैं President Obama को, अमेरिका की जनता को और विशेषकर अमेरिका में बसे भारतीय समुदाय के लोगों को उनकी गर्मजोशी तथा भव्य सत्कार के लिए धन्यवाद देता हूं।

है और यह अनिवार्य है। हमें देशों के बीच सार्थक संवाद एवं सहयोग सुनिश्चित करना है। हमारे प्रयासों का प्रारंभ यहीं संयुक्त राष्ट्र में होना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार लाना, इसे अधिक जनतांत्रिक और भागीदारी परक बनाना हमारे लिए अनिवार्य है।

20वीं सदी की अनिवार्यताओं को प्रतिविदित करने वाली संस्थाएं 21वीं सदी में प्रभावी सिद्ध नहीं होंगी। इनके सम्मुख अप्रासंगिक होने का खतरा प्रस्तुत होगा, और भी आग्रह से कहना चाहता हूं कि पिछली शताब्दी के आवश्यकताओं के अनुसार जिन बातों पर हमने बल दिया, जिन नीति-नियमों का निर्धारण किया वह अभी प्रासंगिक नहीं है। 21वीं सदी में विश्व काफी बदल चुका है, बदल रहा है और बदलने की गति भी बड़ी तेज है। ऐसे समय यह अनिवार्य हो जाता है कि समय के साथ हम अपने आप को ढालें। हम परिवर्तन करें, हम नए विचारों पर बल दें। अगर ये हम कर पायेंगे तभी जाकर के हमारा relevance रहेगा। हमें अपने सभी मतभेदों को दरकिनार कर आतंकवाद से लड़ने के लिए सम्मिलित अंतरराष्ट्रीय प्रयास करना चाहिए।

मैं आपसे यह अनुरोध करता हूं कि इस प्रयास के प्रतीक के रूप में आप comprehensive convention on international terrorism को पारित करें। यह बहुत लंबे अरसे से pending mark है। इस पर बल देने की आवश्यकता है। terrorism के खिलाफ लड़ने की हमारी ताकत का वो एक परिचायक होगा और इसे हमारा देश, जो terrorism से इतने संकटों से गुजरा है, उसको समय लगता है कि जब तक वे इसमें initiative नहीं लेता है, और जब तक हम comprehensive convention on international terrorism को पारित नहीं करते हैं, हम वो विश्वास नहीं दिला सकते हैं। और इसलिए, फिर एक बार भारत की तरफ से इस सम्माननीय सभा के समक्ष बहुत आग्रहपूर्वक मैं अपनी बात बताना चाहता हूं। हमें outer space और cyber space में शांति, स्थिरता एवं व्यवस्था सुनिश्चित करनी होगी। हमें मिलजुल कर काम करते हुए यह सुनिश्चित करना है कि सभी देश अंतरराष्ट्रीय नियमों, मानदंडों का पालन करें। हमें UN Peace Keeping के पुनीत कार्यों को पूरी शक्ति प्रदान करनी चाहिए।

जो देश अपनी सैन्य टुकड़ियों को योगदान करते हैं, उन्हें निर्णय प्रक्रिया में शामिल करना चाहिए। निर्णय प्रक्रिया में शामिल करने से उनका हौसला बुलंद होगा। वो बहुत बड़ी मात्रा में त्याग करने को तैयार है, बलिदान देने को तैयार है, अपनी शक्ति और समय खर्च करने को तैयार हैं, लेकिन अगर हम उन्हें ही निर्णय प्रक्रिया से बाहर रखेंगे तो कब तक हम UN Peace Keeping फोर्स को प्राणवान बना सकते हैं, ताकतवर बना सकते हैं। इस पर गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है।

आइए, हर सार्वभौमिक वैश्विक रिसेसिकरण एवं प्रसार हेतू अपने प्रयासों में दोगुनी शक्ति लगाएं। अपेक्षाकृत अधिक स्थिर तथा समावेशी विकास हेतु निरंतर प्रयासरत रहें। वैश्विकरण ने विकास के नए ध्रुवों, नए उद्योगों और रोजगार के नए स्रोतों को जन्म दिया है। लेकिन साथ ही अरबों लोग गरीबी और अभाव के अर्द्धकगार पर जी रहे हैं। कई देश ऐसे हैं, जो विश्वव्यापी आर्थिक तूफान के प्रभाव से बड़ी मुश्किल से बच पा रहे हैं। लेकिन इन सब में बदलाव लाना जितना मुमकिन आज लग रहा है, उतना पहले कभी नहीं लगता था।

Technology ने बहुत कुछ संभव कर दिखाया है। इसे मुहैया करने में होने वाले खर्च में भी काफी कमी आई है। यदि आप सारी दुनिया में Facebook और Twitter के प्रसार की गति के बारे में, सेलफोन के प्रसार की गति के बारे में सोचते हैं तो आपको यह विश्वास करना चाहिए कि विकास और सशक्तिकरण का प्रसार भी कितनी तेज गति से संभव है।

जाहिर है, प्रत्येक देश को अपने राष्ट्रीय उपाय करने होंगे, प्रगति व विकास को बल देने हेतु प्रत्येक सरकार को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। साथ ही हमारे लिए एक स्तर पर एक सार्थक अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी की आवश्यकता है, जिसका अर्थ हुआ, नीतियों को आप बेहतर समन्वय करें ताकि हमारे प्रयत्न, परस्पर संयोग को बढ़ावा दे तथा दूसरे को क्षति न पहुंचाये। ये उसकी पहली शर्त है कि दूसरे को क्षति न पहुंचाएं। इसका यह भी अर्थ है कि जब हम अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक संबंधों की रचना करते हैं तो हमें एक दूसरे की चिंताओं व हितों का ध्यान रखना चाहिए।

जब हम विश्व के अभाव के स्तर के विषय में सोचते हैं, आज basic sanitation 2.5 बिलियन लोगों के पहुंच के बाहर है। आज 1.3 बिलियन लोगों को बिजली उपलब्ध नहीं है और आज 1.1 बिलियन लोगों को पीने का शुद्ध पानी उपलब्ध नहीं है। तब स्पष्ट होता है कि अधिक व्यापक व संगठित रूप से अंतरराष्ट्रीय कार्यवाही करने की प्रबल आवश्यकता है। हम केवल आर्थिक वृद्धि के लिए इंतजार नहीं कर सकते। भारत में मेरे विकास का एजेंडा के सबसे

महत्वपूर्ण पहलू इन्हीं मुद्दों पर केंद्रित हैं।

मैं यह मानता हूं कि हमें post 2015 development agenda में इन्हीं बातों को केन्द्र में रखना चाहिए और उन पर ध्यान देना चाहिए। रहने लायक तथा टिकाऊ sustainable विश्व की कामना के साथ हम काम करें। इन मुद्दों पर ढेर सारे विवाद एवं दस्तावेज उपलब्ध हैं। लेकिन हम अपने चारों ओर ऐसी कई चीजें देखते हैं, जिनके कारण हमें चिंतित व आगाह हो जाना चाहिए। ऐसी भी चीजें हैं जिन्हें देखने से हम चिंतित होते जा रहे हैं। जंगल, पशु-पक्षी, निर्मल नदियां, जजीरे और नीला आसमान।

मैं तीन बातें कहना चाहूंगा, पहली बात, हमें चुनौतियों से निपटने के लिए अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में ईमानदारी बरतनी चाहिए। विश्व समुदाय ने सामूहिक कार्यवाही के सुंदर संतुलन को स्वीकारा है, जिसका स्वरूप common व differentiated responsibilities। इसे सतत कार्यवाही का आधार बनाना होगा। इसका यह भी अर्थ है कि विकसित देशों को funding और technology transfer की अपनी प्रतिबद्धता को अवश्य पूरा करना चाहिए।

दूसरी बात, राष्ट्रीय कार्यवाही अनिवार्य है। टेक्नोलोजी ने बहुत कुछ संभव कर दिया है, जैसे नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकी। आवश्यकता है तो सृजनशीलता व प्रतिबद्धता की। भारत अपनी टेक्नोलोजी क्षमता को साझा करने के लिए तैयार है। जैसा कि हमने हाल ही में सार्क देशों के लिए एक निःशुल्क उपग्रह बनाने की घोषणा की है।

तीसरी बात हमें अपनी जीवनशैली बदलने की आवश्यकता है। जिस ऊर्जा का उपयोग न हुआ हो, वह सबसे साफ ऊर्जा है। इससे आर्थिक नुकसान नहीं होगा। अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा मिलेगी।

हमारे भारतवर्ष में प्रकृति के प्रति आदरभाव अध्यात्म का अभिन्न अंग है। हम प्रकृति की देन को पवित्र मानते हैं और मैं आज एक और विषय पर भी ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि हम climate change की बात करते हैं। हम होलिस्टिक हेल्थ केयर की बात करते हैं। जब हम back to basics की बात करते हैं तब मैं उस विषय पर विशेष रूप से आप से एक बात कहना चाहता हूं। योग हमारी पुरातन पारम्परिक अमूल्य देन है। योग मन व शरीर, विचार व कर्म, संयम व उपलब्धि की एकात्मकता का तथा मानव व प्रकृति के बीच सामंजस्य का मूर्त रूप है। यह स्वास्थ्य व कल्याण का समग्र दृष्टिकोण है। योग केवल व्यायाम भर न होकर अपने आप से तथा विश्व व प्रकृति के साथ तादम्य को प्राप्त करने का माध्यम है। यह हमारी जीवन शैली में परिवर्तन लाकर तथा हम में जागरूकता उत्पन्न करके जलवायु परिवर्तन से लड़ने में सहायक हो सकता है। आइए हम एक ''अंतरराष्ट्रीय योग दिवस'' को आरंभ करने की दिशा में कार्य करें। अंततः हम सब एक ऐतिहासिक क्षण से गुजर रहे हैं। प्रत्येक युग अपनी विशेषताओं से परिभाषित होता है। प्रत्येक पीढी इस बात से याद की जाती है कि उसने अपनी चुनौतियों का किस प्रकार सामना किया। अब हमारे सम्मुख चुनौतियों के सामने खड़े होने की जिम्मेदारी है। अगले वर्ष हम 70 वर्ष के हो जाएंगे। हमें अपने आप से पूछना होगा कि क्या हम तब तक प्रतीक्षा करें तब हम 80 या 100 के हो जाएं।

मैं मानता हूं कि UN के लिए अगला साल एक opportunity है। जब हम 70 साल की यात्रा के बाद लेखाजोखा लें, कहां से निकले थे, क्यूं निकले थे, क्या मकसद था, क्या रास्ता था, कहां पहुंचे हैं, कहां पहुंचना है।

21 सदी के कौन से प्रकार हैं, कौन से challenges हैं, उन सबको ध्यान में रखते हुए पूरा एक साल व्यापक विचार मंथन हो। हम universities को जोडें, नई generation को जोड़ें जो हमारे कार्यकाल का विगत से मूल्यांकन करे, उसका अध्ययन करे और हमें वो भी अपने विचार दें। हम नई पीढ़ी को हमारी नई यात्रा के लिए कैसे जोड़ सकते हैं और इसलिए मैं कहता हूं कि 70 साल अपने आप में एक बहुत बड़ा अवसर है। इस अवसर का उपयोग करें और उसे उपयोग करके एक नई चेतना के साथ नई प्राणशक्ति के साथ, नए उमंग और उत्साह के साथ, आपस में एक नए विश्वास साथ हम UN की यात्रा को हम नया रूप रंग दें। इस लिए मैं समझता हूं कि ये 70 वर्ष हमारे लिए बहुत बड़ा अवसर है।

आइए, हम संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार लाने के अपने वादे को निभाएं। यह बात लंबे अरसे से चल रही है लेकिन वादों को निभाने का सामर्थ्य हम खो चुके हैं। मैं आज फिर से आग्रह करता हूं कि आज इस विषय में गंभीरता से सोचें। आइए, हम अपने Post 2015 development agenda के लिए अपनी प्रतिबद्धता को पूरा करें।

आइए 2015 को हम विश्व की प्रगति प्रवाह को एक नया मोड़ देने वाले एक वर्ष के रूप में हम अविस्मरणीय बनायें और 2015 एक नितांत नई यात्रा के प्रस्थान बिंदु के रूप में मानव इतिहास में दर्ज हो। यह हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है। मुझे विश्वास है कि सामूहिक जिम्मेदारी को हम पूरी तरह निभाएंगे। ■

# प्रधानमंत्री की अमेरिका यात्रा के दौरान जारी साझा वक्तव्य

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और अमेरिका के राष्ट्रपति श्री बराक ओबामा के बीच 1 अक्तूबर को सुबह बैठक हुई। अपनी पहली द्विपक्षीय शिखर वार्ता में राष्ट्रपति श्री ओबामा ने दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक चुनाव में प्रधानमंत्री श्री मोदी की ऐतिहासिक विजय की सराहना की।

दोनों नेताओं ने अमेरिका और भारत के बीच व्यापक रणनीतिक और वैश्विक भागीदारी की सराहना की, जो दोनों देशों और दुनिया भर के नागरिकों को ज्यादा खुशहाल बनाने तथा उन्हें सुरक्षा प्रदान करना जारी रखेगी। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने जोर देकर कहा कि भारत के जिम्मेदार और प्रभावशाली विश्व शक्ति बनने की दिशा में अमेरिका उसका सैद्धांतिक भागीदार है इसलिये भारत, उसके साथ भागीदारी को अहमियत देता है। दोनों देशों के साझा मूल्यों, जनता के बीच संबंधों और बहुलवादी परम्पराओं का हवाला देते हुए राष्ट्रपति श्री ओबामा ने कहा कि मित्र और भागीदार के रूप में भारत का उदय अमेरिका के हित में है।

उन्होंने कहा कि उनका प्रथम 'रणनीतिक भागीदारी संबंधी विजन दस्तावेज' अगले 10 वर्षों के लिए वैश्विक स्थायित्व और जनता की आजीविका के लाभ के लिए हरेक क्षेत्र में सहयोग और सशक्त एवं और प्रगाढ़ बनाने का मार्गदर्शक बनेगा। उन्होंने दोनों देशों के संबंधों के नये मंत्र 'चलें साथ-साथ' के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की।

दोनों नेताओं ने स्वीकार किया कि द्विपक्षीय रिश्तों को दोनों देशों में जबरदस्त समर्थन प्राप्त है, जिसकी बदौलत सरकारें बदलने के बावजूद रणनीतिक भागीदारी फलती-फूलती रही है। अपने नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए शुरू की गई व्यापक सामूहिक गतिविधियों का स्वागत करते हुए दोनों नेताओं ने वर्तमान भागीदारी में नई जान डालने और सहयोग तथा परस्पर लाभ के नये क्षेत्र तलाशने पर सहमति व्यक्त की।

### आर्थिक वृद्धि

दोनों देशों का व्यापार सन् 2001 से पाँच गुना बढ़कर लगभग सौ अरब डॉलर तक पहुंचने का संज्ञान लेते हुए राष्ट्रपति श्री ओबामा और प्रधानमंत्री श्री मोदी ने इसे और पाँच गुना बढ़ाने की दिशा में उठाए जाने वाले जरूरी कदमों में सहायता करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। राष्ट्रपति श्री ओबामा और प्रधानमंत्री श्री मोदी ने स्वीकार किया कि निरंतर, समावेशी और रोजगारोन्मुख वृद्धि तथा विकास की दिशा में अमेरिका और भारत के व्यापार को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

संस्थागत निवेशकों और कॉरपोरेट इकाइयों के निवेश को बढ़ावा देने के लिए दोनों नेताओं ने पूंजीगत बाजार विकास और अवसंरचना को वित्तीय सहायता देने पर विशेष ध्यान देते हुए वित्त मंत्रालय और वित्त विभाग के नेतृत्व में भारत-अमेरिका निवेश पहल की स्थापना की प्रतिबद्धता व्यक्त की। उन्होंने भारत में ढांचागत परियोजनाओं में अमेरिकी कंपनियों की भागीदारी बढ़ाने के लिए वित्त मंत्रालय और वाणिज्य विभाग द्वारा अवसंरचना सहयोग मंच की स्थापना करने का भी संकल्प व्यक्त किया।

इस संदर्भ में, अजमेर (राजस्थान), विशाखापत्तनम (आंध्र प्रदेश) और इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) में स्मार्ट सिटीज

विकसित करने के लिए अमेरिकी उद्योग जगत को प्रमुख भागीदार बनाने संबंधी भारत की पेशकश का अमेरिका सरकार ने स्वागत किया। प्रधानमंत्री 2015 में अमेरिकी प्रौद्योगिकी और सेवाओं सहित भारत की ढांचागत जरूरतें पूरी करने पर केन्द्रित दो व्यापारिक मिशनों का स्वागत करेंगे।

उन्होंने सभी को साफ पानी और स्वच्छता उपलब्ध कराने के प्रधानमंत्री के लक्ष्य को आगे बढ़ाने की दिशा में नई भागीदारी के लिए भी संकल्पबद्धता व्यक्त की। शहरी भारत जल, साफ-सफाई और स्वच्छता (डब्ल्यूएएसएच) गठबंधन के जरिए यूएसएआईडी निजी और सिविल सोसायटी नवरचना, विशेषज्ञता और प्रौद्योगिकी को बल प्रदान करने के लिए ज्ञान भागीदार के रुप में योगदान देगी, यथा बिल एंड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन प्रधानमंत्री के 500 सिटीज राष्ट्रीय शहरी विकास मिशन और स्वच्छ भारत अभियान में सहायता देगी।

राष्ट्रपति श्री ओबामा ने सभी नागरिकों को बुनियादी वित्तीय सेवाएं प्रदान करने, उन्हें अपने वित्त का प्रबंधन करने का सशक्त माध्यम प्रदान करने और भारत की विकास की राह पर अग्रसर अर्थव्यवस्था में उन्हें पूर्ण भागीदार बनाने की प्रधानमंत्री श्री मोदी की महत्त्वकांक्षी योजना का स्वागत किया। राष्ट्रपति श्री ओबामा और प्रधानमंत्री श्री मोदी ने इस बात पर बल दिया कि अमेरिकी व्यापार और विकास एजेंसी के अभिगम कार्यक्रम सहित अमेरिकी रेल ईंजन प्रौद्योगिकी, रेल प्रणाली परिसंपत्तियों की निगरानी के उपकरण तथा अमेरिका की उत्कृष्ट पद्धतियां, भारत के विशाल रेलवे नेटवर्क के आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

दोनों नेताओं ने विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) में मौजूदा गतिरोध और बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली पर उसके प्रभाव के बारे में चर्चा की और अपने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे डब्ल्यूटीओ के अन्य सदस्य देशों के साथ भावी कदमों के बारे में तत्काल चर्चा करें। दोनों नेतों ने कारोबार के अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देने के लिए व्यापार नीति मंच के माध्यम से काम करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की, ताकि कंपनियां भारत और अमेरिका में निवेश तथा निर्माण करने के लिए आकर्षित हो सकें। आर्थिक वृद्धि और रोजगार सृजन को बढ़ावा देने के लिए नवरचना को प्रोत्साहन देने की जरूरत पर सहमति व्यक्त करते हुए दोनों नेताओं ने व्यापार नीति मंच के अंग के रुप में उचित निर्णय लेने वाली और तकनीकी स्तर की बैठकों सहित वार्षिक उच्च स्तरीय बौद्धिक संपदा कार्य समूह की स्थापना की प्रतिबद्धता जाहिर की। उन्होंने भारत- अमेरिका व्यापार एवं निवेश संबंधों को प्रगाढ़ बनाने में भारतीय और अमेरिकी सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग तथा आईटी सक्षम सेवा उद्योग के योगदान को स्वीकार किया।

दोनों नेताओं ने 2015 के आरंभ में आधुनिक विनिर्माण में नवरचना सहित सहयोग के नये क्षेत्रों में वाणिज्यिक वार्ता के अंतर्गत सार्वजनिक-निजी विचार विमर्श आयोजित करने की भी प्रतिबद्धता व्यक्त की। विनिर्माण में उत्कृष्ट पद्धतियां साझा करने के लिए मानदंडों में व्यापक तालमेल कायम करने के वास्ते, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्टैंडर्डस एंड टेक्नोलॉजी का विनिर्माण विस्तार भागीदारी कार्यक्रम भारतीय समकक्षों के साथ संवाद शुरू करेगा। दोनों देशों की सीमापार व्यापार और निवेश में व्यापक विश्वास सुगम बनाने के लिए कई साझा पहलों के जरिए तेजी से काम करने की योजना है।

दोनों नेता 2015 के आरंभ में होने वाली वार्षिक अमेरिकी-भारत आर्थिक और वित्तीय भागीदारी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्होंने भारतीय रिजर्व बैंक और अमेरिकी फैडरल डिपोजिट इंश्योरेंस कॉर्पोरेशन, फैडरल रिजर्व सिस्टम के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स और कम्पट्रोलर ऑफ करंसी कार्यालय सहित वित्तीय संस्थानों की निगरानी की दिशा में भागीदारी बढ़ाने का भी स्वागत किया। उन्होंने भारत- अमेरिका सीईओ फोरम में नई जान डालने पर भी सहमति व्यक्त की और वर्ष 2015 के आरंभ में दूसरी बार फोरम की मेजबानी करने की भारत की पेशकश का स्वागत किया।

**ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन**

दोनों नेताओं ने भारत- अमेरिकी असैन्य परमाणु समझौते को पूरी तरह लागू करने की प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने अमेरिका निर्मित परमाणु बिजली घरों से भारत में बिजली उपलब्ध कराने के साझा लक्ष्य को जल्द पूरा करने के लिए असैन्य परमाणु ऊर्जा सहयोग के कार्यान्वयन को आगे बढ़ाने के लिए संपर्क समूह स्थापित किया। उन्होंने सिर्फ प्रशासनिक मामलों तक सीमित न रहते हुए उत्तरदायित्व, तकनीकी मामलों और वेस्टिंगहाऊस और जीई हिताची टेक्नोलॉजी वाले पॉवर प्लांट्स सहित परमाणु पार्कों की स्थापना में सहायता देने के लिए लाइसेंसिग सहित कार्यान्वयन से जुड़े सभी मामलों पर बातचीत आगे बढ़ाने की मंशा जाहिर की।

ऊर्जा तक पहुंच बढ़ाने, ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाने तथा जलवायु परिवर्तन के लिए बेहतर लचीलेपन की महत्वपूर्ण आवश्यकता स्वीकार करते हुए राष्ट्रपति श्री ओबामा और प्रधानमंत्री श्री मोदी ने ऊर्जा सुरक्षा, स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन पर नई एवं व्याक रणनीतिक भागीदारी

बनाने पर सहमति व्यक्त की। उन्होंने उपयोगी शहरी ऊर्जा अवसंरचना को बढ़ावा देने के लिए नये प्रकार की एनर्जी स्मार्ट सिटीज पार्टनरशिप, भारत के पावर ग्रिड में नवीकरणीय ऊर्जा एकीकरण को बढ़ावा देने के नये कार्यक्रम, भारत के वैकल्पिक ऊर्जा संस्थानों को अद्यतन बनाने और नये नवरचना केन्द्र विकसित करने के प्रयासों में सहयोग, अतिरिक्त निजी क्षेत्र निवेश और किफायती, अत्यधिक कारगर उपकरणों की तैनाती में तेजी लाने के लिए स्वच्छ ऊर्जा के जरिए ऊर्जा तक पहुंच बढ़ाने (पीईएसीई) संबंधी कार्यक्रम का विस्तार तथा स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं में निवेश और व्यापार को बढ़ावा देने के लिए नये स्वच्छ ऊर्जा वित्तीय मंच के गठन सहित कई प्राथमिकता वाली पहलों के माध्यम से अत्यधिक सफल अमरीका-भारत के बीच पार्टनरशिप टू एडवांस क्लीन एनर्जी (पीएसीई) को सशक्त बनाने और उसका दायरा बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की।

दोनों नेताओं ने जलवायु परिवर्तन पर नये वैश्विक समझौते की रचना सहित पेरिस में 2015 में होने वाले जलवायु परिवर्तन संबंधी संयुक्त राष्ट्र संधि के प्रारुप (यूएनएफसीसीसी) के सफल परिणामों की दिशा में काम करने की भी प्रतिबद्धता व्यक्त की।

दोनों नेताओं ने हाइड्रो-लोरो कार्बन्स (एचएफसी) में कमी लाने के बारे में पिछले द्विपक्षीय और बहुपक्षीय वक्तव्यों को याद किया। उन्होंने स्वीकार किया कि यूएनएफसीसीसी के अंतर्गत मात्रा में कमी लाने की जानकारी और गणना जारी रखते हुए एचएफसी की खपत और उसके उत्पादन में कमी लाने के लिए मॉन्ट्रील प्रोटोकॉल की संस्थाओं और विशेषज्ञता को इस्तेमाल में लाने की जरूरत है। उन्होंने मॉन्ट्रील प्रोटोकॉल की अगली बैठक से पहले सुरक्षा, लागत, एचएफसी के बदले नई और वैकल्पिक प्रौद्योगिकियों तक व्यावसायिक पहुंच जैसे मामलों पर चर्चा के लिए एचएफसी के बारे में अपने द्विपक्षीय कार्यबल की आपात बैठक बुलाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। उसके बाद दोनों पक्ष एचएफसी द्वारा प्रस्तुत धरती के बढ़ते तापमान संबंधी चुनौती से निपटने में सहयोग करेंगे।

उन्होंने जलवायु के अनुकूल नियोजन और जलवायु परिवर्तन तथा इंसानों के स्वास्थ्य के लाभ के लिए वायु गुणवत्ता संबंधी नये कार्यक्रम के लिए क्षमता बढ़ाने के वास्ते जलवायु लचीलेपन संबंधी नई अमरीका-भारत भागीदारी का आरंभ किया।

उन्होंने दोनों देशों में जलवायु परिवर्तन से संबंधी मामलों को सुलझाने के लिए दीर्घकालिक क्षमता बनाने के लिए नये अमरीका-भारत जलवायु फैलोशिप कार्यक्रम की भी शुरूआत की। राष्ट्रपति श्री ओबामा और प्रधानमंत्री श्री मोदी ने अपने वरिष्ठ अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे इस तरह की पहलों को आगे बढ़ाने के लिए अमरीका-भारत ऊर्जा संवाद, जलवायु परिवर्तन से निपटने संबंधी अमरीका-भारत संयुक्त कार्यसमूह और अन्य संबंधित मंचों के माध्यम से कार्य करें।

दोनों नेताओं ने निर्यात-आयात बैंक और भारतीय नवीकरणीय ऊर्जा विकास एजेंसी के बीच समझौता ज्ञापन का स्वागत किया, इससे भारत में अमरीकी नवीकरणीय ऊर्जा निर्यात को बढ़ावा देते हुए, कम कार्बन और जलवायु-लचीलेपन वाली ऊर्जा अर्थव्यवस्था में बदलाव के भारत के प्रयासों को प्रोत्साहन देने के लिए एक अरब डॉलर की राशि उपलब्ध हो सकेगी। दोनों नेताओं ने भारत की मूल्यवान जैव-विविधता के संरक्षण का महत्व दोहराया और राष्ट्रीय उद्यानों तथा वन्य जीव संरक्षण में सहयोग की संभावनाएं तलाशने पर सहमति व्यक्त की।

**रक्षा और राष्ट्र सुरक्षा सहयोग**

प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति ने राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा मजबूत करने के लिए रक्षा सहयोग का विस्तार करने की अपनी इच्छा जाहिर की। दोनों नेताओं ने इस बात पर प्रतिबद्धता दोहरायी कि भारत और अमेरिका स्थायी मित्रता कायम करेंगे, जिसमें दोनों पक्ष रक्षा प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, व्यापार, अनुसंधान, सह-उत्पादन और सहविकास क्षेत्रों सहित एक दूसरे के साथ नजदीकी भागीदार के रूप में एक दूसरे के साथ समान व्यवहार करेंगे।

रक्षा उत्पादन में सहयोग को और मजबूती प्रदान करने के लिए उन्होंने अमेरिका-भारत रक्षा संबंधों के 2005 के ढांचे का 10 और वर्षों के लिए नवीकरण करने के निर्णय का स्वागत किया। दोनों नेता राजनीतिक-सैन्य वार्ता को पुनर्जीवित करने, निर्यात लाइसेंस प्रदान करने तथा रक्षा सहयोग और सामरिक सहयोग में इसकी भूमिका बढाने के लिए विस्तृत वार्ता करने पर भी सहमत हुए।

दोनों नेताओं ने सितम्बर 2014 में रक्षा व्यापार और प्रौद्योगिकी पहल के ढांचे के अधीन पहली बैठक का स्वागत किया और विशिष्ट परियोजनाओं और प्रौद्योगिकियों की समीक्षा करने और उन पर तेजी से निर्णय लेने के लिए कार्य बल स्थापित करने के निर्णय पर जोर दिया। इससे द्विपक्षीय रक्षा संबंधों पर सुधारात्मक प्रभाव पड़ेगा और भारत के रक्षा उद्योग तथा सैन्य क्षमताओं में बढोतरी होगी।

प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति ने सैनिक शिक्षा और प्रशिक्षण

के क्षेत्र में सहयोग का स्वागत किया और भारत के योजित राष्ट्रीय रक्षा विश्व विद्यालय में सहयोग करने के लिए अमेरिका की योजनाओं का समर्थन किया। उन्होंने विशेषज्ञों के आदान-प्रदान, वार्ताओं, संयुक्त प्रशिक्षण और अभ्यासों सहित सेना से सेना में भागीदारियों को बढाने का भी निर्णय लिया। उन्होंने नागरिक और सैन्य इन्टैलिजेंस और परामर्श बढाने का निर्णय लिया।

दोनों नेताओं ने नेवीगेशन की स्वतंत्रता और अंतर्राष्ट्रीय कानून के मान्य सिद्धातों के अनुसार कानूनी नौवहन और व्यापारिक गतिविधियों की बेरोकटोक आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए सहमति व्यक्त की। इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए दोनों पक्षों ने प्रौद्योगिकी सहयोग के संभावित क्षेत्रों की समीक्षा सहित भारत की नौसेना के लिए प्रौद्योगिकी भागीदारियां बढाने के बारे में विचार-विमर्श किया। वे वर्तमान द्विपक्षीय अभ्यास मालाबार को उन्नत बनाने पर भी सहमत हैं।

नेताओं ने आतंकवाद की लगातार बढ़ रही चुनौती और अभी हाल में आईएसआईएल द्वारा पेश किए गए खतरों के बारे में गहरी चिंता व्यक्त की और आतंकवाद का मुकाबला करके उसे मात देने के लिए व्यापक वैश्विक प्रयास जारी रखने की जरूरत पर जोर दिया। नेताओं ने आतंकवाद और आपराधिक गतिविधियों के सुरक्षित ठिकानों तथा अल-कायदा, लश्कर ए तैयबा, जैश ए मोहम्मद, डी कंपनी और हक्कानिस जैसे संगठनों के नेटवर्क के लिए सभी वित्तीय तथा नीतिगत समर्थन नष्ट करने के लिए संयुक्त और ठोस प्रयास करने की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने पाकिस्तान से मुम्बई में नवम्बर 2008 में हुए आतंकवादी हमले के दोषियों को न्यायालय को सौंपने का फिर से आह्वान किया। उन्होंने अपराधी कानून लागू करने, सुरक्षा, सैन्य सूचना आदान-प्रदान और प्रत्यावरण तथा आपसी कानूनी सहायता के संबंध में सहयोग को और मजबूत करने के बारे में प्रतिबद्धता व्यक्त की। उन्होंने अपनी कानून लागू करने वाली एजेंसियों से नकली मुद्रा का प्रसार रोकने और आतंकवादियों, अपराधियों और गैर कानूनी उद्देश्यों के लिए इंटरनेट का प्रयोग करने वाले अपराधियों द्वारा साइबर स्पेस के उपयोग को परिचालन सहयोग द्वारा रोकने तथा अपराधी और आतंकवादी गतिविधियों की जांच में मदद देने का लक्ष्य रखा। उन्होंने आतंकवादियों की सूचियों के आदान-प्रदान के तौर-तरीकों की पहचान करने के लिए प्रतिबद्धता दर्शायी। राष्ट्रपति ओबामा ने सूचना और प्रौद्योगिकी की मदद से विस्फोटक उपकरणों की चुनौती का मुकाबला करने के लिए भारत की मदद करने का वायदा किया। नेताओं ने भारत को अमेरिका में निर्मित बारूदी सुरंग विस्फोट निरोधक वाहन देने के प्रावधान को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की।

राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने दोनों देशों में यात्रा को आसान बनाने के लिए सहमति व्यक्त की। भारत ने 2015 में अमेरिकी नागरिकों को भारत आगमन पर वीजा देने की योजना शुरू की है और भारतीय नागरिकों के लिए संयुक्त राष्ट्र वैश्विक प्रवेश कार्यक्रम उपलब्ध कराने की आवश्यकताओं को पूरा करने का कार्य शुरू किया गया है।

**उच्च प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष एवं स्वास्थ्य सहयोग**

मूलभूत विज्ञान एवं उच्च प्रौद्योगिकी सहयोग सामरिक भागीदारी का मुख्य स्तम्भ रहा है। दोनों नेताओं ने नवीन प्रौद्योगिकी में संयुक्त गतिविधियों का विस्तार करने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी अनुबंध का नवीकरण करने की पुष्टि की है। प्रधानमंत्री ने नवम्बर 2014 में आयोजित भारत के वार्षिक प्रौद्योगिकी सम्मेलन में पहली बार एक भागीदार देश के रूप में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका का स्वागत किया है। इसके अलावा उन्होंने नौंवा उच्च प्रौद्योगिकी की सहयोग समूह (एचटीसीजी) आयोजित करने के लिए प्रतिबद्धता दर्शायी। उन्होंने दोनों देशों के नागरिकों के लाभ और वैश्विक विकास चुनौतियों को दूर करने के लिए नवाचार के उपयोग हेतु नवाचार के स्रोतों का पता लगाने के लिए नए भागीदार बनाने की भी योजना बनाई है।

राष्ट्रपति ने अमेरिका ऊर्जा विभाग के साथ उच्च-ऊर्जा भौतिकी और त्वरित अनुसंधान और विकास के बारे में भारत के सहयोग और योगदान की सराहना की। राष्ट्रपति ने नए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में अमेरिकी संस्थान की भागीदारी करने के प्रस्ताव के लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद दिया।

दोनों नेताओं ने डिजिटल मूल ढांचा बढाने, ई-गवर्नेंस और ई-सर्विस स्थापित करने, प्रौद्योगिकी सहयोग को प्रोत्साहित करने और भारत के नागरिक को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने के उद्देश्य से डिजिटल इंडिया पहल में भागीदार बनने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की। राष्ट्रपति ने ग्लोबल इनिशिएटिव ऑफ एकेडेमिक नेटवर्क (ज्ञान) की स्थापना करने के लिए भारत के प्रस्ताव का स्वागत किया। जिसके तहत भारत प्रतिवर्ष 1000 तक अमेरिकी शिक्षाविदों को उनकी सुविधा के अनुसार केंद्र द्वारा मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों में छात्रों को पढ़ाने के लिए आमंत्रित करेगा।

दोनों नेताओं ने अपने-अपने मंगल अभियान के अपने

कक्ष में दो दिन के अंतराल से हुए सफल प्रवेश के बारे में एक-दूसरे को बधाई दी। उन्होंने अमेरिका-भारत सिविल स्पेस संयुक्त कार्यदल के अधीन नासा-इसरो मार्श संयुक्त कार्यदल की पहली बैठक की स्थापना और योजना का स्वागत किया। दोनों नेताओं ने 2021 में शुरू किए जाने वाले नासा-इसरो सिंथेटिक अपरचर रडार (एनआईएसएआर) मिशन के समर्थन में नए समझौते के सफल निष्कर्ष के लिए उत्सुकता जाहिर की।

भारत और अमेरिका ने अंतरिक्ष स्थितिक जागरुकता और बाहरी अंतरिक्ष में टकराव रोकने सहित दीर्घकालीन सुरक्षा और बाह्य अंतरिक्ष में स्थिरता पर नई वार्ता शुरू करने की इच्छा जाहिर की।

राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने स्वास्थ्य क्षेत्र में चल रहे बड़े सहयोग की सराहना की जिसे वे इबोला वायरस के फैलने की रोकथाम में भी उपयोग करेंगे। राष्ट्रपति ने संयुक्त राष्ट्र निधि में भारत के योगदान और इबोला के खिलाफ प्रयासों में तेजी लाने के लिए दिए गए दान के लिए धन्यवाद दिया। प्रधानमंत्री ने इस बीमारी को फैलने से रोकने के लिए प्रतिरूपण तैयार करने, त्वरित तैनात योग्य नैदानिक उपकरणों के संयुक्त उत्पादन और कार्य कर्मियों के संयुक्त प्रशिक्षण में स्रोतों के संसाधनों के निवेश सहित इबोला के विरुद्ध लड़ाई में भारतीय विशेषज्ञों को तैनात करने का प्रस्ताव दिया। अमेरिका अन्य देशों में भारत के सफल प्रयासों सहित निरोधक शिशु एवं मातृ-मृत्यु दर और घटाने के लिए भारत के प्रयासों में मदद करने के लिए तैयार है।

दोनों नेता डेंगू, मलेरिया और टीबी के लिए सस्ते टीके विकसित करने के लिए भारत-अमेरिका टीका कार्य कार्यक्रम का नया चरण शुरू करने और एक सहायक विकास केंद्र स्थापित करने के लिए राजी हैं। उन्होंने सहयोगी कार्यक्रम विकसित करने सहित कैंसर अनुसंधान और रोगी देखभाल की क्षमता में बढोतरी करने के लिए सहयोगी गतिविधियां शुरू करने पर सैद्धांतिक रूप से सहमति व्यक्त की। राष्ट्रपति ने वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा एजेंडा में शीर्ष भूमिका निभाने के लिए भारत के प्रस्ताव का स्वागत किया।

**अंतराष्ट्रीय मुद्दे और क्षेत्रीय विचार-विमर्श**

साझा लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति ध्यान दिलाते हुए राष्ट्रपति श्री बराक ओबामा और प्रधानमंत्री श्री मोदी ने भारत और अमरीका में महिलाओं द्वारा निभाई जा रही महत्वपूर्ण भूमिका जिसे भारत द्वारा बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान द्वारा भी प्रदर्शित किया गया, का ध्यान दिलाया। दोनों देश महिलाओं की भूमिका को बढ़ाने के लिए महिला आधिकारिता वार्तालाप आयोजित करेंगे और महिलाओं के विरूद्ध हिंसा के प्रति कोई सहनशीलता न रखने की प्रतिबद्धता दोहराई।

अंतर्राष्ट्रीय अप्रसार और निर्यात नियंत्रण नीति को मजबूत करने के प्रति राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने परमाणु वितरक समूह (एनएसजी) मिसाइल तकनीक नियंत्रण व्यवस्था (एमटीसीआर) वेसनार समझौत और ऑस्ट्रेलिया समूह में भारत की क्रमबद्ध प्रवेश के प्रति प्रतिबद्धता जाहिर की। राष्ट्रपति श्री बराक ओबामा ने कहा कि भारत एमटीसीआर की आवश्यकताओं को पूर्ण करता है और एनएसजी की सदस्यता के लिए तैयार है। उन्होंने सभी चारों व्यवस्थाओं में भारत के प्रवेश और शीघ्र अनुप्रयोग का समर्थन किया।

परमाणु सुरक्षा शिखर सम्मेलन के सक्रिय पक्षकारों के रूप में अमेरिका और भारत ने आंतकवादियों द्वारा परमाणु हथियारों या संबधित पदार्थों को प्राप्त करने संबधी खतरों कम करने में प्रगति का स्वागत किया और राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर परमाणु सुरक्षा को बढाने के प्रति साझा प्रतिबद्धता स्पष्ट की। दोनों देशों ने परमाणु सुरक्षा पर दिपक्षीय वार्ता की समीक्षा की और परमाणु ऊर्जा के विश्व स्तर पर सुरक्षित प्रयोग के लिए भारत को वैश्विक स्तर पर परमाणु ऊर्जा भागीदारी का केंद्र बनाने के प्रति कार्य करने का समर्थन किया। दोनों देशों ने सामूहिक विनाश के अस्त्रों का अप्रसार, अंतर्राष्ट्रीय मामलों में परमाणु हथियारों की प्रमुखता को कम करने और गैर-पक्षपाती वैश्विक परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए वैश्विक प्रयासों का नेतृत्व के लिए भागीदारी को सशक्त करने का संकल्प लिया।

भारत की पूर्वी एशिया के प्रति कार्य करने की नीति का उल्लेख और अमेरिका के एशिया पर संतुलन पर दोनों नेताओं ने अन्य एशिया प्रशांत क्षेत्र के देशों के साथ विमर्श, वार्तालाप और संयुक्त अभ्यास के अधिक कार्य करने की प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने जापान के साथ द्विपक्षीय वार्ता की महत्ता को रेखांकित किया और दोनों देशों के विदेश मंत्रियों के बीच इस वार्तालाप को करने की इच्छा जाहिर की।

राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण द्वारा दक्षिण, दक्षिणपूर्व और मध्य एशिया को जोड़ने के लिए आधारभूत संयोजकता और आर्थिक विकास कोरीडोर पर शीघ्रता से कार्य करने की आवश्यकता पर जोर दिया। राष्ट्रपति श्री बराक ओबामा ने दोहराया कि अमेरिका नए सिल्क मार्ग और भारत-प्रशांत आर्थिक कारीडोर के द्वारा भारत के पड़ोसी देशों ओर विस्तृत क्षेत्र से संपर्क को प्रोत्साहन दे रहा है, जिसके

वाणिज्य और ऊर्जा का मुक्त प्रवाह हो सके।

राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने तीन अफ्रीकी देशों में कृषि नवाचार के क्षेत्र में दोनों देशों के सहयोग का उल्लेख किया। उन्होंने अन्य देशों में कई क्षेत्रों कृषि उत्पादकता, स्वच्छ ऊर्जा, स्वास्थ्य, महिला आधिकारिता और आपदा से निपटने में तैयारी के क्षेत्र में नए समझौते द्वारा संयुक्त विकास पहल की घोषणा की। दोनों देश अफगानिस्तान में महिलाओं की आर्थिक आधिकारिता को प्रोत्साहन करने के लिए लाभकारी सहयोग को जारी रखेंगे।

राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने एशिया प्रशांत क्षेत्र की निरंतर समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण शांति और स्थिरता को बनाए रखने के लिए साझा रूचि के प्रति पुनः पुष्टि की। दोनों नेताओं ने क्षेत्रीय समुद्री विवादों को लेकर बढ़ते तनाव पर चिंता व्यक्त की और संपूर्ण क्षेत्र विशेष तौर पर दक्षिणी चीन सागर में समुद्री रक्षा की महत्ता और नौपरिवहन और हवाई सेवा को सुनिश्चित करने को दोहराया। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने सभी पक्षों से अपने दावों के लिए बलप्रयोग करने या इसकी धमकी देने से बचने का अनुरोध किया। दोनों नेताओं ने संबधित पक्षों से अपने क्षेत्रीय और समुद्री विवादों को मान्यताप्राप्त अंतराष्ट्रीय कानूनों के सिद्धातों जिसमें समुद्री क्षेत्र पर संयुक्त राष्ट्र संघ समझौता सम्मिलित है द्वारा सभी संभव शांति प्रयासों द्वारा हल करने का संकल्प लेने के प्रति अनुरोध किया।

भारत और अमेरिका विश्व संकट के विषयों पर अधिक विचार-विमर्श के लिए सहमत हुए, जिसमें सीरिया और ईराक में हो रहे घटनाक्रम विशेषतौर पर शामिल हैं। दोनों देश इन संकटग्रस्त क्षेत्रों से लौटने वाले अपने नागरिकों के संबध में सूचनाओं के आदान-प्रदान करने और इन क्षेत्रों में फंसे नागरिकों की आवश्यकता पर प्रतिक्रिया देने और उनकी रक्षा करने में सहयोग करेंगे।

अफगानिस्तान के साथ दोनों देशों की सामरिक भागीदारी की महत्ता को स्वीकार हुए दोनों नेताओं ने निरंतर, सम्मिलित, सार्वभौम और लोकतांत्रिक राजनीतिक सुव्यवस्था की महत्ता को दोहराया। दोनों देश अफगानिस्तान के भविष्य के समर्थन के प्रति परस्पर विचार-विमर्श को जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

उन्होंने इरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर अंतराष्ट्रीय समुदाय की गंभीर चिंताओं को कूटनीति द्वारा सुलझाने की आवश्यकता पर जोर दिया और इरान से संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा लगाए शर्तों का पालने करने और अंतराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के साथ पूर्ण सहयोग करने को कहा।

दोनों नेताओं ने उत्तरी कोरिया द्वारा यूरेनियम संवर्धन करने और परमाणु हथियारों और प्रक्षेपात्र के निरंतर विकास पर चिंता जाहिर की। उन्होंने उत्तरी कोरिया से हथियार न बनाने और अन्य बिंदुओं के प्रति ठोस कदम उठाने का अनुरोध किया। इसमें वर्ष 2005 में छह पक्षों की वार्ता के अंतर्गत दी गई वचनबद्धता और संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी संबधित प्रस्ताव शामिल हैं।

राष्ट्रपति ने विगत 60 वर्ष में विश्व शांति और स्थिरता के लिए भारतीय शांति बलों के योगदान की सराहना करते हुए भारत द्वारा अन्य देशों के शांति बलों को प्रशिक्षण देने के लिए दिल्ली में केंद्र बनाने का स्वागत किया। राष्ट्रपति ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता के प्रति सहयोग के लिए प्रतिबद्धता दोहराते हुए दोनो नेताओं ने संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणापत्र के तहत अंतर्राष्ट्रीय शांति और स्थिरता को बनाए रखने में सुरक्षा परिषद की प्रभावी भूमिका को सुनिश्चित करने को कहा।

राष्ट्रपति ने अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संगठनों में भारत की भूमिका बढाने की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने और बहुस्तरीय विकास बैंकों द्वारा आधारभूत ढांचे के लिए वित्त प्रयोग करने को रचनात्मकता द्वारा प्रयोग करने को कहा।

राष्ट्रपति ने भारत जैसे महान देश पधारने के लिए प्रधानमंत्री के शालीन निमंत्रण का धन्यवाद दिया। समापन करते हुए दोनों नेताओं ने लचीली और महत्वाकांक्षी भागीदारी द्वारा पहले सामरिक भागीदारी के लिए विजन वक्तव्य के प्रति दीर्धकालिक दृष्टिकोण को दोहराया जिसे वे अपनी सरकार और नागरिकों के लिए मार्गदर्शक रूपरेखा रखेंगे। ■

**रेडियो पर देश को संबोधन : मन की बात**

# आइए, हम सब गंदगी से मुक्ति का संकल्प लें : नरेंद्र मोदी

**प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 3 अक्टूबर को रेडियो पर देश को दिए गये पहले संबोधन का मूल पाठ**

मेरे प्यारे देशवासियो,

आज विजयदशमी का पावन पर्व है। आप सबको विजयदशमी की अनेक-अनेक शुभकामनाएं।

मैं आज रेडियो के माध्यम से आपसे कुछ मन की बाते बताना चाहता हूं और मेरे मन में तो ऐसा है कि सिर्फ आज नहीं कि बातचीत का अपना क्रम आगे भी चलता रहे। मैं कोशिश करूंगा, हो सके तो महीने में दो बार या तो महीने में एक बार समय निकाल कर के आपसे बाते करूं। आगे चलकर के मैंने मन में यह भी सोचा है कि जब भी बात करूंगा तो रविवार होगा और समय प्रातः 11 बजे का होगा तो आपको भी सुविधा रहेगी और मुझे भी ये संतोष होगा कि मैं मेरे मन की बात आपके मन तक पहुंचाने में सफल हुआ हूं।

आज जो विजयदशमी का पर्व मनाते हैं ये विजयदशमी का पर्व बुराइयों पर अच्छाइयों की विजय का पर्व है। लेकिन एक श्रीमान गणेश वेंकटादरी मुंबई के सज्जन, उन्होंने मुझे एक मेल भेजा, उन्होंने कहा कि विजयदशमी में हम अपने भीतर की दस बुराइयों को खत्म करने का संकल्प करें। मैं उनके इस सुझाव के लिए उनका आभार व्यक्त करता हूं। हर कोई जरूर सोचता होगा अपने-अपने भीतर की जितनी ज्यादा बुराइयों को पराजय करके विजय प्राप्त करे, लेकिन राष्ट्र के रूप में मुझे लगता है कि आओ विजयदशमी के पावन पर्व पर हम सब गंदगी से मुक्ति का संकल्प करें और गंदगी को खत्म कर कर के विजय प्राप्त करना विजयदशमी के पर्व पर हम ये संकल्प कर सकते हैं।

कल 2 अक्टूबर पर महात्मा गांधी की जन्म जयंती पर ''स्वच्छभारत'' का अभियान सवा सौ करोड़ देशवासियों ने आरंभ किया है। मुझे विश्वास है कि आप सब इसको आगे बढ़ाएंगे। मैंने कल एक बात कही थी ''स्वच्छ भारत अभियान'' में कि मैं नौ लोगों को निमंत्रित करूंगा और वे खुद सफाई करते हुए अपने वीडियो को सोशल मीडिया में अपलोड करेंगे और वे 'और' नौ लोगों को निमंत्रित करेंगे। आप भी इसमें जुड़िए, आप सफाई कीजिए, आप जिन नौ लोगों का आह्वान करना चाहते हैं, उनको कीजिए, वे भी सफाई करें, आपके साथी मित्रों को कहिए, बहुत ऊपर जाने की जरूरत नहीं, और नौ लोगों को कहें, फिर वो और नौ लोगों को कहें, धीरे-धीरे पूरे देश में ये माहौल बन जाएगा। मैं विश्वास करता हूं कि इस काम को आप आगे बढ़ायेंगे।

हम जब महात्मा गांधी की बात करते हैं, तो खादी की बात बहुत स्वाभाविक ध्यान में आती है। आपके परिवार में अनेक प्रकार के वस्त्र होंगे, अनेक प्रकार के वस्त्र होंगे, अनेक प्रकार के फैब्रिक्स होंगे, अनेक कंपनियों के products होंगे, क्या उसमें एक खादी का नहीं हो सकता क्या, मैं अपको खादीधारी बनने के लिए नहीं कह रहा, आप पूर्ण खादीधारी होने का व्रत करें, ये भी नहीं कह रहा। मैं सिर्फ इतना कहता हूं कि कम से कम एक चीज, भले ही वह हैंडकरचीफ, भले घर में नहाने का तौलिया हो, भले हो सकता है बैडशीट हो, तकिए का कबर हो, पर्दा हो, कुछ तो भी हो, अगर परिवार में हर प्रकार के फैब्रिक्स का शौक है, हर प्रकार के कपड़ों का शौक है, तो ये नियमित होना चाहिए और ये मैं इसलिए कह रहा हूं कि अगर आप खादी का वस्त्र खरीदते हैं तो एक गरीब के घर में दीवाली का दीया जलता है और

इसीलिए एकाध चीज ... और इन दिनों तो 2 अक्टूबर से लेकर करीब महीने भर खादी के बाजार में स्पेशल डिस्काउंट होता है, उसका फायदा भी उठा सकते हैं। एक छोटी चीज... और आग्रहपूर्वक इसको करिए और आप देखिए गरीब के साथ आपका कैसा जुड़ाव आता है। उस पर आपको कैसी सफलता मिलती है। मैं जब कहता हूं सवा सौ करोड़ देशवासी अब तक क्या हुआ है.... हमको लगता है सब कुछ सरकार करेगी और हम कहां रह गए, हमने देखा है .... अगर आगे बढ़ना है तो सवा सौ करोड़ देशवासियों को... करना पड़ेगा... हमें खुद को पहचानना पड़ेगा, अपनी शक्ति को जानना पड़ेगा और मैं सच बताता हूं हम विश्व में अजोड़ लोग हैं। आप जानते हैं हमारे ही वैज्ञानिकों ने कम से कम खर्च में मार्स पहुंचने का सफल प्रयोग, सफलता पूर्वक पर कर दिया। हमारी ताकत में कमी नहीं है, सिर्फ हम अपनी शक्ति को भूल चुके हैं। अपने आपको भूल चुके हैं। हम जैसे निराश्रित बन गए हैं.. नहीं मेरे प्यारे भइयों बहनों ऐसा नहीं हो सकता। मुझे स्वामी विवेकानन्द जी जो एक बात कहते थे, वो बराबर याद आती है। स्वामी विवेकानन्द अक्सर एक बात हमेशा बताया करते थे। शायद ये बात उन्होंने कई बार लोगों को सुनाई होगी।

विवेकानन्द जी कहते थे कि एक बार एक शेरनी अपने दो छोटे-छोटे बच्चों को ले कर के रास्ते से गुजर रही थी। दूर से उसने भेड़ का झुंड देखा, तो शिकार करने का मन कर गया, तो शेरनी उस तरफ दौड़ पड़ी और उसके साथ उसका एक बच्चा भी दौड़ने लगा। उसका दूसरा बच्चा पीछे छूट गया और शेरनी भेड़ का शिकार करती हुई आगे बढ़ गई। एक बच्चा भी चला गया, लेकिन एक बच्चा बिछड़ गया, जो

**अगर आगे बढ़ना है तो सवा सौ करोड़ देशवासियों को... करना पड़ेगा... हमें खुद को पहचानना पड़ेगा, अपनी शक्ति को जानना पड़ेगा और मैं सच बताता हूं हम विश्व में अजोड़ लोग हैं।**

बच्चा बिछड़ गया उसको एक माता भेड़ ने उसको पाला-पोसा बड़ा किया और वो शेर भेड़ के बीच में ही बड़ा होने लगा। उसकी बोलचाल, आदतें सारी भेड़ की जैसी हो गई। उसका हंसना खेलना, बैठना, सब भेड़ के साथ ही हो गया। एक बार, वो जो शेरनी के साथ बच्चा चला गया था, वो अब बड़ा हो गया था। उसने उसको एक बार देखा ये क्या बात है। ये तो शेर है और भेड़ के साथ खेल रहा है। भेड़ की तरह बोल रहा है। क्या हो गया है इसको। तो शेर को थोड़ा अपना अहम पर ही संकट आ गया। वो इसके पास गया। वो कहने लगा अरे तुम क्या कर रहे हो। तुम तो शेर हो। कहता- नहीं, मैं तो भेड़ हूं। मैं तो इन्हीं के बीच पला-बढ़ा हूं। उन्होंने मुझे बड़ा किया है। मेरी आवाज देखिए, मेरी बातचीत का तरीका देखिए। तो शेर ने कहा कि चलो मैं दिखाता हूं तुम कौन हो। उसको एक कुएं के पास ले गया और कुएं में पानी के अंदर उसका चेहरा दिखाया और खुद के चेहरे के साथ उसको कहा- देखो, हम दोनों का चेहरा एक है। मैं भी शेर हूं, तुम भी शेर हो और जैसे ही उसके भीतर से आत्मसम्मान जगा, उसकी अपनी पहचान हुई तो वो भी उस शेर की तरह, भेड़ों के बीच पला शेर भी दहाड़ने लगा। उसके भीतर का सत्व जग गया। स्वामी विवेकानंद जी यही कहते थे। मेरे देशवासियों, सवा सौ करोड़ देशवासियों के भीतर अपार शक्ति है, अपार सामर्थ्य है। हमें अपने आपको पहचानने की जरूरत है। हमारे भीतर की ताकत को पहचानने की जरूरत है और फिर जैसा स्वामी विवेकानंदजी ने कहा था उस आत्म-सम्मान को ले करके, अपनी सही पहचान को ले करके हम चल पड़ेंगे, तो विजयी होंगे और हमारा राष्ट्र भी विजयी होगा, सफल होगा। मुझे लगता है हमारे सवा सौ करोड़ देशवासी भी सामर्थ्यवान हैं, शक्तिवान हैं और हम भी बहुत विश्वास के साथ खड़े हो सकते हैं।

इन दिनों मुझे ई-मेल के द्वारा सोशल मीडिया के द्वारा, फेस-बुक के द्वारा कई मित्र मुझे चिट्ठी लिखते हैं। एक गौतम पाल करके व्यक्ति ने एक चिंता जताई है, उसने कहा है कि जो स्पैशली एबल्ड चाईल्ड होते हैं, उन बालकों के लिए नगरपालिका हो, महानगरपालिका, पंचायत हो, उसमें कोई न कोई विशेष योजनाएं होती रहनी चाहिए। उनका हौसला बुलन्द करना चाहिए। मुझे उनका ये सुझाव अच्छा लगा क्योंकि मेरा अपना अनुभव है कि जब मैं गुजरात में मुख्यामंत्री था तो 2011 में एथेन्स में जो स्पेशल ओलम्पिक होता है, उसमें जब गुजरात के बच्चे गये और विजयी होकर आये तो मैंने उन सब बच्चों को, स्पेशली एबल्ड बच्चों को मैंने घर बुलाया। मैंने दो घंटे उनके साथ बिताये, शायद वो मेरे जीवन का बहुत ही इमोशनल, बड़ा प्रेरक, वो घटना थी। क्योंकि मैं मानता हूं कि किसी परिवार में स्पेशली एबल्ड बालक है तो सिर्फ उनके मां-बाप का दायित्व नहीं है। ये पूरे समाज का दायित्व है। परमात्मा ने शायद उस परिवार को पसंद किया है,

लेकिन वो बालक तो सारे राष्ट्र की जिम्मेदारी होता है। बाद में इतना मैं इमोशनली टच हो गया था कि मैं गुजरात में स्पेशली एबल्ड बच्चों के लिए अलग ओलम्पिक करता था। हजारों बालक आते थे, उनके मां-बाप आते थे। मैं खुद जाता था। ऐसा एक विश्वास का वातावरण पैदा होता था और इसलिए मैं गौतम पाल के सुझाव, जो उन्होंने दिया है, इसके लिये मैं, मुझे अच्छा लगा और मेरा मन कर गया कि मैं मुझे जो ये सुझाव आया है मैं आपके साथ शेयर करूं।

एक कथा मुझे और भी ध्यान आती है। एक बार एक राहगीर रास्ते के किनारे पर बैठा था और आते-आते सबको पूछ रहा था मुझे वहाँ पहुंचना है, रास्ता कहा है। पहले को पूछा, दूसरे को पूछा, चौथे को पूछा। सबको पूछता ही रहता था और उसके बगल में एक सज्जन बैठे थे। वो सारा देख रहे थे। बाद में खड़ा हुआ। खड़ा होकर किसी को पूछने लगा, तो वो सज्जन खड़े हो करके उनके पास आये। उसने कहा, देखो भाई, तुमको जहां जाना है न, उसका रास्ता इस तरफ से जाता है। तो उस राहगीर ने उसको पूछा कि भाई साहब आप इतनी देर से मेरे बगल में बेठे हो, मैं इतने लोगों को रास्ता पूछ रहा हूं, कोई मुझे बता नहीं रहा है। आपको पता था तो आप क्यों नहीं बताते थे। बोले, मुझे भरोसा नहीं था कि तुम सचमुच में चलकर के जाना चाहते हो या नहीं चाहते हो। या ऐसे ही जानकारी के लिए पूछते रहते हो। लेकिन जब तुम खड़े हो गये तो मेरा मन कर गया कि हां अब तो इस आदमी को जाना है, पक्का लगता है। तब जा करके मुझे लगा कि मुझे आपको रास्ता दिखाना चाहिए।

मेरे देशवासियों, जब तक हम चलने का संकल्प नहीं करते, हम खुद खड़े नहीं होते, तब रास्ता दिखाने वाले भी नहीं मिलेंगे। हमें उंगली पकड़ कर चलाने वाले नहीं मिलेंगे। चलने की शुरूआत हमें करनी पड़ेगी और मुझे विश्वास है कि सवा सौ करोड़ जरूर चलने के लिए सामर्थ्यवान है, चलते रहेंगे।

कुछ दिनों से मेरे पास जो अनेक सुझाव आते हैं, बड़े इण्टरेस्टिंग सुझाव लोग भेजते हैं। मैं जानता हूं कब कैसे कर पायेंगे, लेकिन मैं इन सुझावों के लिए भी एक सक्रियता जो है न, देश हम सबका है, सरकार का देश थोड़े न है। नागरिकों का देश है। नागरिकों का जुड़ना बहुत जरूरी है। मुझे कुछ लोगों ने कहा है कि जब वो लघु उद्योग शुरू करते हैं तो उसकी पंजीकरण जो प्रक्रिया है वो आसान होनी चाहिए। मैं जरूर सरकार को उसके लिए सूचित करूंगा। कुछ लोगों ने मुझे लिख करके भेजा है बच्चों को पांचवीं कक्षा से ही स्किल डेवलेपमेंट सिखाना चाहिए। ताकि वो पढ़ते ही पढ़ते ही कोई न कोई अपना हुनर सीख लें, कारीगरी सीख लें। बहुत ही अच्छा सुझाव उन्होंने दिया है। उन्होंने ये भी कहा है कि युवकों को भी स्किल डेवलेपमेंट होना चाहिए उनकी पढ़ाई के अंदर। किसी ने मुझे लिखा है कि हर सौ मीटर के अंदर डस्टबीन होना चाहिए, सफाई की व्यवस्था करनी है तो।

कुछ लोगों ने मुझे लिख करके भेजा है कि पॉलीथिन के पैक पर प्रतिबंध लगना चाहिए। ढेर सारे सुझाव लोग मुझे भेज रहे हैं। मैं आगे से ही आपको कहता हूं अगर आप मुझे कहीं पर भी कोई सत्य घटना भेजेंगे, जो सकारात्मक हो, जो मुझे भी प्रेरणा दे, देशवासियों को प्रेरणा दे, अगर ऐसी सत्य घटनाएं सबूत के साथ मुझे भेजोगे तो मैं जरूर जब मन की बात करूंगा, जो चीज मेरे मन को छू गयी है वो बातें मैं जरूर देशवासियों तक पहुंचाऊंगा।

ये सारा मेरा बातचीत करने का इरादा एक ही है- आओ, हम सब मिल करके अपनी भारत माता की सेवा करें। हम देश को नयी ऊंचाइयों पर ले जायें। हर कोई एक कदम चले, अगर आप एक कदम चलते हैं, देश सवा सौ करोड़ कदम आगे चला जाता है और इसी काम के लिए आज विजयदशमी के पावन पर्व पर अपने भीतर की सभी बुराइयों को परास्त करके विजयी होने के संकल्प के साथ, कुछ अच्छा करने का निर्णय करने के साथ हम सब प्रारंभ करें। आज मेरी शुभ शुरूआत है। जैसा जैसा मन में आता जायेगा, भविष्य में जरूर आपसे बातें करता रहूंगा। आज जो बातें मेरे मन में आई वो बातें मैंने आपको कही है। फिर जब मिलूंगा, रविवार को मिलूंगा। सुबह 11 बजे मिलूंगा लेकिन मुझे विश्वास है कि हमारी यात्रा बनी रहेगी, आपका प्यार बना रहेगा।

आप भी मेरी बात सुनने के बाद अगर मुझे कुछ कहना चाहते हैं, जरूर मुझे पहुंचा दीजिये, मुझे अच्छा लगेगा। मुझे बहुत अच्छा लगा आज आप सबसे बातें कर के और रेडियो का....ऐसा सरल माध्यम है कि मैं दूर-दूर तक पहुंच पाऊंगा। गरीब से गरीब घर तक पहुंच जाऊंगा, क्योंकि मेरा, मेरे देश की ताकत गरीब की झोंपड़ी में है, मेरे देश की ताकत गांव में है, मेरे देश की ताकत माताओं, बहनों, नौजवानों में है, मेरी देश की ताकत किसानों में है। आपके भरोसे से ही देश आगे बढ़ेगा। मैं विश्वास व्यक्त करता हूं। आपकी शक्ति में भरोसा है इसलिए मुझे भारत के भविष्य में भरोसा है। ■

**प्रधानमंत्री ने की 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरुआत**

# "हम सब महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को पूरा करें"

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 2 अक्टूबर को लोगों से महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को पूरा करने का आह्वान किया। नई दिल्ली में राजपथ पर स्वच्छ भारत अभियान की औपचारिक शुरुआत करते हुए प्रधानमंत्री ने भारत माता के दो महान सपूतों महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्होंने याद दिलाया कि कैसे श्री शास्त्री द्वारा ''जय जवान, जय किसान'' का नारा दिए जाने के बाद किसानों ने कड़ी मेहनत की और देश को खाद्य सुरक्षा के मामले में आत्मनिर्भर बनाया। उन्होंने कहा कि गांधीजी के दो सपनों (भारत छोड़ो और स्वच्छ भारत) में से एक को हकीकत में बदलने में लोगों ने मदद की। हालांकि, स्वच्छ भारत का दूसरा सपना अब भी पूरा होना बाकी है। उन्होंने कहा कि एक भारतीय नागरिक होने की खातिर यह हमारी सामाजिक जिम्मेदारी है कि हम वर्ष 2019 में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती मनाए जाने तक उनके स्वच्छ भारत के सपने को पूरा करें।

प्रधानमंत्री ने देश की सभी पिछली सरकारों और सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संगठनों द्वारा सफाई को लेकर किए गए प्रयासों की सराहना की। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि भारत को स्वच्छ बनाने का काम किसी एक व्यक्ति या अकेले सरकार का नहीं है, यह काम तो देश के 125 करोड़ लोगों द्वारा किया जाना है जो भारत माता के पुत्र-पुत्रियां हैं। उन्होंने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान को एक जन आंदोलन में तब्दील करना चाहिए। लोगों को ठान लेना चाहिए कि वह न तो गंदगी करेंगे और न ही करने देंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक साफ-सफाई

न होने के चलते भारत में प्रति व्यक्ति औसतन 6500 रुपये जाया हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि इसके मद्देनजर स्वच्छ भारत जन स्वास्थ्य पर अनुकूल असर डालेगा और इसके साथ ही गरीबों की गाढ़ी कमाई की बचत भी होगी, जिससे अंततः राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान होगा। उन्होंने लोगों से साफ-सफाई के सपने को साकार करने के लिए इसमें हर वर्ष 100 घंटे योगदान करने की अपील की है। प्रधानमंत्री ने शौचालय बनाने की अहमियत को भी रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि साफ-सफाई को राजनीतिक चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे देशभक्ति और जन स्वास्थ्य के प्रति कटिबद्धता से जोड़ कर देखा जाना चाहिए।

प्रधानमंत्री ने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान में योगदान देने और सोशल मीडिया पर इसे साझा करने के लिए उन्होंने नौ हस्तियों को आमंत्रित किया है, जिनमें मृदुला सिन्हा, सचिन तेंदुलकर, बाबा रामदेव, शशि थरूर, अनिल अंबानी, कमल हसन, सलमान खान, प्रियंका चोपड़ा और 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' की टीम शामिल हैं। उन्होंने बताया कि इन कार्यों को अंजाम देने के लिए नौ अन्य लोगों को आमंत्रित किया गया है और इस तरह एक श्रृंखला-सी बना दी गई है। उन्होंने लोगों से #MyCleanIndia का इस्तेमाल करते हुए सोशल मीडिया पर अपने योगदान को साझा करने का आग्रह किया है।

प्रधानमंत्री ने स्वच्छ भारत अभियान के प्रतीक चिन्ह और इसके नारे से जुड़ी प्रतियोगिता के विजेताओं को बधाई दी। ये हैं- महाराष्ट्र से अनंत और गुजरात से भाग्यश्री। नारा है- 'एक कदम स्वच्छता की ओर'। प्रधानमंत्री जब उपस्थित भीड़ को स्वच्छता की शपथ दिला रहे थे तो उस वक्त जाने-माने फिल्म अभिनेता आमिर खान ने भी मंच साझा किया। केन्द्रीय मंत्रियों वेंकैया नायडू और नितिन गडकरी ने भी उपस्थित लोगों को संबोधित किया।

इससे पहले प्रधानमंत्री राजघाट एवं विजयघाट गए और देश के दो महान सपूतों महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की। इसके बाद वह वाल्मीकि बस्ती गए, जहां महात्मा गांधी एक बार रुके थे। प्रधानमंत्री ने यहीं से स्वच्छता अभियान की शुरुआत की। प्रधानमंत्री ने नई दिल्ली स्थित मंदिर मार्ग पुलिस स्टेशन का औचक निरीक्षण भी किया। प्रधानमंत्री ने स्वयं एक झाड़ू लेकर धूल की सफाई की। बाद में उन्होंने पुलिस अधिकारियों से स्वच्छता बनाए रखने का आह्वान किया।

**स्वच्छ भारत अभियान : झलकियां**

- पूरे दिल्ली शहर में आज स्वच्छ भारत की भावना गुंजायमान रही।
- पाँच हजार बच्चों ने प्रधानमंत्री का करतल ध्वनि से स्वागत किया। स्वच्छता अभियान के समर्थन में बच्चे ध्वज और प्ले कार्ड्स लहरा रहे थे।
- स्वच्छता अभियान से संबंधित फिल्म इस अवसर पर मौजूद हरेक व्यक्ति ने बड़ी तल्लीनता के साथ देखी।
- शपथ से पहले जानेमाने अभिनेता और सामाजिक कार्यकर्ता, श्री आमिर खान को मंच पर बुलाया गया और उसके बाद प्रधानमंत्री द्वारा शपथ दिलाई गई। प्रधानमंत्री ने सभी लोगों से कहा कि वे शपथ लेते समय अपने हाथ उठाएं और महात्मा गांधी का ध्यान करें।
- व्रत पर होने के बावजूद वॉकेथॉन का शुभारंभ करने के बाद बच्चों की खुशी के लिए प्रधानमंत्री ने उनके साथ चलना शुरू कर दिया और वे कुछ दूरी तक उनके साथ चले।
- इस अवसर पर समाज के सभी तबकों के लोग राजघाट पर एकत्र हुए।
- वाल्मीकि बस्ती में प्रधानमंत्री ने बच्चों से ''स्वच्छता सेनानी'' बनने का आह्वान किया। ■

# एक वर्ष के अन्दर पीएसयू का स्कूलों में एक लाख शौचालयों बनाने का लक्ष्य : पीयूष गोयल

ऊर्जा, कोयला और नवीन तथा रिन्यूएबल ऊर्जा में राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री पीयूष गोयल ने एक वर्ष के अंदर उनके मंत्रालय के अन्तर्गत पीएसयू द्वारा स्कूलों में एक लाख शौचालय बनाने की घोषणा की है। विद्युत, कोयला, नवीन तथा रिन्यूएबल ऊर्जा और अपने पीएसयू के कर्मचारियों को स्वच्छता प्रतिज्ञा की शपथ दिलाते हुए स्वच्छ भारत मिशन को क्रियान्वित करने को कहा। श्री गोयल ने उनसे अनुरोध किया कि वे स्वच्छता के लिए वचनबद्ध रहे और इसके लिए समय निकालें। उन्होंने कहा कि इस बारे में उठाया गया हर कदम देश को स्वच्छ बनाने में सहायक होगा और आर्थिक समृद्धि लाएगा।

श्री गोयल ने कहा कि ऊर्जा परिवार प्रधानमंत्री के भारत को स्वच्छता और सफाई के सपने को सकार करने के लिए महत्वपूर्ण कार्य करेगा। उन्होंने अपनी आशा व्यक्त की कि आज का स्वच्छता अभियान का प्रोत्साहन एक उत्तम कार्य है। उन्होंने कहा कि देश को साफ रखने के अनेकानेक आर्थिक लाभ है, जिससे पर्यटन, रोजगार के अवसरों और आय में सुधार आएगा। श्री गोयल ने आगे कहा कि आने वाले दिनों में प्रत्येक कर्मचारी को विश्व के सामने स्वच्छ भारत की छवि की परियोजना को मिलकर पेश करना चाहिए।

नई दिल्ली में, विद्युत, कोयला तथा नवीन एवं रिन्यूएअल ऊर्जा मंत्रालयों के सचिवों को उनके अपने-अपने कार्यालयों में स्वच्छता प्रतिज्ञा की शपथ दिलाई। श्रम शक्ति भवन में श्री पी.के. सिन्हा, सचिव विद्युत, श्री एस. के. श्रीवास्तव, सचिव कोयला ने शास्त्री भवन में और श्री उपेन्द्र त्रिपाठी, सचिव एमएनआई ने सीजीओ कम्पलैक्स में स्वच्छता अभियान के बारे में वरिष्ठ अधिकारियों तथा बड़ी संख्या में कर्मचारी सदस्यों को इस अभियान में शामिल होने के लिए कहा।

इसी प्रकार विद्युत, कोयला और नवीन तथा रिन्यूअल के अन्तर्गत उर्जा को सभी पीएसयू में अपने-अपने सीएमडी और यूनिट अध्यक्षों ने देशभर में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई। ■

# पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती पर 25 सितंबर को
# प्रधानमंत्री ने की 'मेक इन इंडिया' पहल की शुरूआत

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के निर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मेक इन इंडिया पहल की शुरूआत की।

राजधानी के विज्ञान भवन में मौजूद शीर्ष ग्लोबल सीईओ सहित विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि "एफडीआई'' को ''प्रत्यक्ष विदेशी निवेश'' के साथ ''फर्स्ट डेवलप इंडिया'' के रूप में समझा जाना चाहिए। उन्होंने निवेशकों से आग्रह किया कि वे भारत को सिर्फ बाजार के रूप में न देखें बल्कि इसे एक अवसर समझें।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आम आदमी की क्रय शक्ति बढ़नी चाहिए क्योंकि इससे मांग बढ़गी और निवेशकों को फायदा मिलने के साथ-साथ विकास को बढ़ावा मिलेगा। लोगों को जितनी तेजी से गरीबी से बाहर निकालकर मध्यम वर्ग में लाया जाएगा, वैश्विक व्यवसाय के लिए उतने ही अधिक अवसर खुलेंगे। उन्होंने कहा, इसलिए विदेशों से निवेशकों को नौकरियां सृजित करनी चाहिए। प्रधानमंत्री ने कहा कि सस्ते निर्माण और उदार खरीददार- जिसके पास क्रय शक्ति हो- दोनों की ही जरूरत है। उन्होंने कहा कि अधिक रोजगार का अर्थ है अधिक क्रय शक्ति का होना।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है जहां लोकतंत्र, जनसंख्या और मांग का अनोखा मिश्रण है। उन्होंने कहा कि नई सरकार कौशल विकास के लिए पहल कर रही है ताकि निर्माण के लिए कुशल जनशक्ति सुनिश्चित की जा सके। उन्होंने डिजीटल इंडिया मिशन का जिक्र करते हुए कहा कि इससे सुनिश्चित होगा कि सरकारी प्रक्रिया कार्पोरेट की प्रक्रिया के अनुकूल रहे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों से वे महसूस कर रहे थे कि नीतिगत मुद्दों पर स्पष्टता का अभाव होने के कारण भारत के व्यावसायिक समुदाय के बीच निराशा है। उन्होंने कहा कि उन्हें यहां तक सुनने को मिला कि भारतीय व्यवसायी भारत छोड़ कर चले जाएंगे तथा कहीं और जाकर व्यवसाय

स्थापित कर लेंगे। प्रधानमंत्री ने कहा कि इससे उन्हें दुख पहुंचा। उन्होंने कहा कि किसी भी भारतीय व्यवसाय को किसी भी परिस्थिति में देश छोड़ने की बाध्यता जैसी भावना नहीं आनी चाहिए। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ महीनों के अनुभव के आधार पर वे कह सकते हैं कि अब ये निराशा समाप्त हो गई है।

प्रधानमंत्री ने दस्तावेजों का स्व-प्रमाणीकरण करने की सरकार की नई पहल का उदाहरण दिया और कहा कि यह इस बात को स्पष्ट करता है कि नई सरकार को अपने नागरिकों पर कितना विश्वास है। आइये विश्वास के साथ शुरूआत करें, यदि कोई परेशानी है तो सरकार हस्तक्षेप कर सकती है। प्रधानमंत्री ने कहा कि विश्वास भी बदलाव की ताकत बन सकता है।

श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि विकास और विकासोन्मुख रोजगार सरकार की जिम्मेदारी है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत में व्यवसाय करना कठिन माना जाता था। उन्होंने इस संबंध में सरकारी अधिकारियों को संवेदनशील बनाया। उन्होंने 'प्रभावकारी' शासन की जरूरत पर बल दिया।

''लुक ईस्ट'' अभिव्यक्ति के साथ प्रधानमंत्री ने ''लिंक वेस्ट'' को जोड़ा उन्होंने कहा कि एक वैश्विक दूरदर्शिता आवश्यक है। उन्होंने कहा स्वच्छ भारत और ''कचरे से सम्पन्नता'' मिशन अच्छी आमदनी और बिजनस का जरिया बन सकते हैं। उन्होंने सार्वजनिक निजी भागीदारी के जारिए भारत के 500 शहरों में बेकार पानी के प्रबंधन और ठोस कचरा प्रबंधन के बारे में अपने विजन का जिक्र किया।

प्रधानमंत्री ने राजमार्गो के अलावा आई-वेज सहित भविष्य के बुनियादी ढांचे की चर्चा की और बंदरगाह प्रमुख विकास, ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क, गैस ग्रिड और जल ग्रिडों का जिक्र किया।

प्रधानमंत्री ने मेक इन इंडिया का प्रतीक चिन्ह जारी किया और वेबसाइट makeinindia.com की शुरूआत की। ■

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव पर विशेष

# ''भाजपा महाराष्ट्र का सम्मान फिर से कायम करेगी''

*महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव-प्रचार जोरों पर है। राज्य में 15 अक्टूबर को मतदान होना है और 19 अक्टूबर को मतगणना की जाएगी। भाजपा महाराष्ट्र का सम्मान फिर से कायम करने, किसान आत्महत्या, राज्य की कांग्रेस-राकांपा शासन में हुए घोटाले को मुद्दा बनाकर जोरदार चुनाव अभियान चला रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह समेत अनेक वरिष्ठ पार्टी नेतागण चुनाव-अभियान को गति प्रदान कर रहे हैं। हम यहां कुछ प्रमुख चुनावी जनसभाओं के संक्षिप्त समाचार प्रकाशित कर रहे हैं:*

**रहुरी**

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 9 अक्टूबर को रहुरी (अहमदनगर) में एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए विपक्षी राजनीतिक दलों पर जमकर हल्ला बोला। श्री मोदी ने कहा कि उनको महाराष्ट्र के कोने-कोने में जाकर लोगों के दर्शन का सौभाग्य मिला, इस बार भाजपा के विरोधियों के पास कोई मुद्दा नहीं है। जनता अब किसी भी पास को सहने के लिए तैयार नहीं है और देश को लूटने वालों से हिसाब चुकता कर रही है। प्रधानमंत्री ने कांग्रेस-राकांपा की सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि 15 साल में काम होता, तो महाराष्ट्र कहां से कहां होता। लेकिन राज्य सरकार का एक ही कारोबार रहा है, एलबीटी (लूटो बांटो टैक्स)। उन्होंने कहा कि यहां उनकी (कांग्रेस-राकांपा) सरकार थी और किसान आत्महत्या कर रहे थे। श्री मोदी ने लोगों से रूबरू होते हुए कहा कि इनसे किसानों की मौत का जवाब लेना चाहिए कि नहीं, कांग्रेस--राकांपा को इसका जवाब देना होगा।

**नागपुर**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 7 अक्टूबर को कहा कि देश की आजादी के 75वें वर्ष 2022 में देश का कोई भी परिवार बेघर नहीं होगा। श्री मोदी नागपुर में पार्टी के उम्मीदवार के पक्ष में एक रैली को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हर परिवार चाहता है कि उसके सिर पर छत हो और उसके घर में बिजली. पानी और शौचालय की सुविधा हो लेकिन आजादी के इतने वर्षो बाद भी गरीब परिवारों को एक छत की नसीब नहीं हुई। श्री मोदी ने कहा कि मैं आप सभी को भरोसा दिलाता हूं कि जो गरीब परिवार झुग्गी झोपड़ियों में रह रहे हैं, उन्हें 2022 तक घर उपलब्ध कराया जायेगा।

**सिंदखेड़ा**

श्री नरेंद्र मोदी ने 7 अक्टूबर को कहा कि ऐसी कोई ताकत अभी पैदा नहीं हुई जो महाराष्ट्र को बांट सके। उन्होंने ये भी कहा कि मुंबई के बिना महाराष्ट्र अधूरा है और महाराष्ट्र

के बिना हिंदुस्तान अधूरा है। श्री मोदी ने कहा कि चुनाव के बुखार में लोग कुछ भी बोल रहे हैं, कुछ भी आरोप लगा रहे हैं और झूठ फैला रहे हैं लेकिन वो ताकत अभी पैदा नहीं हुई जो महाराष्ट्र को बांट सके। जब तक मैं दिल्ली में बैठा हूं महाराष्ट्र को कोई नहीं बांट सकता। श्री मोदी ने कहा कि मुंबई को महाराष्ट्र से अलग करने के आरोप भी लग रहे हैं। लेकिन ऐसे लोग सुन लें कि मुंबई के बिना महाराष्ट्र अधूरा है, और महाराष्ट्र के बिना हिंदुस्तान अधूरा है।

**लोनावला**

महाराष्ट्र में भाजपा की सरकार बनाने की पुरजोर वकालत करते हुए पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 6 अक्टूबर को कांग्रेस और एनसीपी के 15 साल लंबे शासनकाल में हुए कथित घोटालों और भ्रष्टाचार के मुद्दे पर दोनों पार्टियों पर हमला बोला।

श्री शाह ने कहा कि भाजपा की सरकार महाराष्ट्र का सम्मान फिर से कायम करेगी और इसका समग्र विकास सुनिश्चित करेगी। पुणे के हड़पसर और लोनावला में चुनावी रैलियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, ''एक ऐसी सरकार चुनिए जो महाराष्ट्र के सम्मान को फिर से स्थापित कर सके, राज्य का समग्र विकास सुनिश्चित करे और इसे सभी राज्यों में नंबर एक बनाए।''

उन्होंने कहा, ''महाराष्ट्र का विकास होने पर ही देश प्रगति कर सकता है। यहां ऐसी सरकार होनी चाहिए जो केंद्र का समर्थन करे।''

**कोल्हापुर**

महाराष्ट्र के कोल्हापुर में एक चुनावी रैली में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 5 अक्टूबर को कांग्रेस पार्टी और राकांपा पर जमकर निशाना साधा। श्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस के लोग सोचते हैं कि मैंने महात्मा गांधी को उनसे छीन लिया है, लेकिन हकीकत यह है कि उन्होंने ही गांधी को छोड़ दिया है।

श्री मोदी ने कहा, 'एक गांधीजी को वे (कांग्रेस के लोग) पसंद करते हैं, और वह गांधी नोटों पर छपे हैं। इसके बिना उनकी राजनीति नहीं चल सकती।' उन्होंने कहा कि गांधीजी ने कोल्हापुर में चरखा आश्रम की आधारशिला रखी थी लेकिन कांग्रेस सरकारों ने उस काम को पूरा नहीं किया।

**मुंबई**

आघाडी सरकार ने डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का भव्य स्मारक बनवाने के लिए कोई प्रयास नहीं किया, जिसके चलते स्मारक नहीं बन पाया। राज्य में भाजपा की सरकार आने पर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का भव्य स्मारक बनवाया जाएगा। ऐसा आश्वासन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 4 अक्टूबर को घाटकोपर के सोमैया मैदान में उपस्थित जन समुदाय को दिया है। श्री मोदी ने जन समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि मुंबई में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का स्मारक बनवाने के लिए आघाडी सरकार ने कोई प्रयास नहीं किया, केवल वोटों की राजनीति की है। जिससे स्मारक का काम नहीं हुआ। भाजपा सरकार सत्ता में आयी तो डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का भव्य स्मारक बनकर तैयार हो जाएगा।

श्री मोदी के इस आश्वासन पर उपस्थित भीम सैनिकों में खुशी की लहर फैल गई। ■

हरियाणा विधानसभा चुनाव पर विशेष

# ''स्कैम हरियाणा को स्किल हरियाणा में बदलेंगे''

*हरियाणा में विधानसभा चुनाव अभियान चरम पर है। यहां भी 15 अक्टूबर को मतदान होना है और 19 अक्टूबर को परिणाम आएंगे। कांग्रेस, भाजपा और इलेलो के बीच आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति जमकर हो रही है। भाजपा इस बार चुनाव-प्रचार में सबसे आगे है। विभिन्न सर्वे भी बता रहे हैं कि इस बार राज्य में भाजपा की सरकार बनेगी। भाजपा नेता हरियाणा के गांव-गांव तक जाकर चुनाव-प्रचार कर रहे हैं। अपने अभियान में भाजपा नेता राज्य की कांग्रेस सरकार में हुए घोटाले, हरियाणा की राजनीति में व्याप्त परिवारवाद, भ्रूण हत्या, दलितों का सम्मान, महिला सुरक्षा आदि मुद्दे उठा रहे हैं। हम यहां चुनावी जनसभाओं में भाजपा नेताओं द्वारा दिए गए संक्षिप्त समाचार प्रस्तुत कर रहे हैं:*

**सोनीपत**

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 8 अक्टूबर को कहा कि छुआछूत, बाहुबल और परिवारवाद से लोकतंत्र नहीं चलता। हरियाणा को परिवारवाद और बाहुबलियों की जकड़न से मुक्त कराने की जरूरत है। हरियाणा को लुटने से बचाने के लिए

यहां भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बनानी होगी। हरियाणा के अपने तूफानी दौरे के दौरान उन्होंने रोहतक, महेंद्रगढ़, यमुनानगर और सोनीपत यानी प्रदेश के हर कोने में पार्टी प्रत्याशियों के पक्ष में जनसभाएं कीं। चारों रैलियों के दौरान उनके निशाने पर कांग्रेस और इनेलो रहे। श्री मोदी ने कहा कि अभी तक प्रदेश में पांच परिवारों का ही शासन रहा है। पर्दे के पीछे इनकी दोस्ती है और लूट के लिए आपस में सहमति है। सत्ता किसी के भी पास हो, राज इनका ही रहता है। यदि प्रदेश को तबाही से बचाना है तो परिवारवाद की राजनीति को अलविदा कहना होगा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री हुड्डा ने दस साल राज किया। फिर भी दलित व महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। यूपीए सरकार की संसदीय कमेटी ने 19 दलित लड़कियों के साथ दुष्कर्म की रिपोर्ट दी थी। कई मामलों में आज तक एफआइआर भी दर्ज नहीं हो पाई है। यह शर्मनाक है।

**रोहतक**

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 8 अक्टूबर को कहा कि रोहतक में मुख्यमंत्री और उनके परिवार का दबदबा है। यहां उन्होंने प्रदेश में, खासकर गांवों में बाहुबलियों के आतंक और उन पर किसी न किसी राजनेता की छत्रछाया रहता है। परिवारवाद से मुक्ति की अपील करते हुए उन्होंने कहा कि वह बारीकी से अध्ययन कर इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि हमेशा प्रदेश की सत्ता पांच परिवारों के पास रही और मुखिया के परिवार ठेके और जिले बांटकर प्रदेश को बर्बाद करते रहे। श्री नरेंद्र मोदी तिरंगे और

उसके चक्र के रंगों के आधार पर चतुरंगी क्रांति का नारा दे रहे थे। जब उन्होंने कहा कि मैं केसरिया क्रांति करना चाहता हूं तो जनता ने तालियां बजाई। फिर उन्होंने कहा कि केसरिया क्रांति की बात से सेक्युलरों के पेट में दर्द हो जाएगा, उन्हें बुखार हो जाएगा। श्री नरेंद्र मोदी ने यहां सामाजिक मसलों पर सजग रहने वाले वर्ग को प्रदेश में प्रचलित कन्या भ्रूण हत्या को रोकने की अपील के साथ आकर्षित किया।

**महेंद्रगढ़**

हरियाणा के महेंद्रगढ़ में रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 8 अक्टूबर को कहा कि राज्य में हर जगह लूट चल रही है। राज्य में परिवारवाद की राजनीति हावी है। श्री मोदी ने कांग्रेस पर हमलावर होते हुए कहा कि 60 साल राज करने वाले उनसे 60 दिन का हिसाब-किताब

मांग रहे हैं। मैं देश की जनता को पाई-पाई का हिसाब दूंगा। 125 करोड़ देशवासी मेरे साथ है। हरियाणा किसानों-जवानों की भूमि है। उन्होंने कहा कि हमने जो वायदे किए हैं उन्हें पूरा करेंगे। उन्होंने कहा कि चुनाव में किया गया वायदा वन रेंक वन पेंशन को केंद्र में भाजपा की सरकार बनते ही लागू किया गया। हरियाणा का कर्ज चुकाने का अवसर मिला तो पास-पास भी रहेंगे और साथ साथ भी। श्री मोदी ने कहा कि परिवारशाही से मुक्त हरियाणा के लिए भाजपा लाएं। स्कैम हरियाणा नहीं स्किल हरियाणा बनाएं।

**सिरसा**

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने 7 अक्टूबर को प्रदेश के सिरसा और फतेहाबाद जिलों के रानियां, ऐलनाबाद और रतिया में चुनावी जनसभाओं को संबोधित किया। श्री अमित शाह ने कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी व भ्रष्टाचार के मामले में सजायाता आईएनएलडी प्रमुख ओमप्रकाश चौटाला पर कड़े प्रहार किए। उन्होंने कहा कि चौटाला तिहाड़ में बैठकर मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने की सोच रहे हैं, लेकिन किसी भी आम नागरिक को तिहाड़ जाना पसंद नहीं है। प्रदेश की जनता असंवैधानिक प्रक्रिया का साथ नहीं देगी। उन्होंने कहा कि इस बार हरियाणा की जनता बीजेपी को भारी बहुमत से जिता रही है। बीजेपी की सरकार बनते ही पूरे प्रदेश का समान रूप से विकास होगा और विकास की शुरुआत पिछड़े क्षेत्रों से होगी। अमित शाह ने सोनिया गांधी की नेतृत्व वाली यूपीए सरकार पर कटाक्ष करते हुए कहा कि कोलगेट घोटाला मामले में यूपीए सरकार के तमाम मंत्री शामिल रहे। देश का खरबों रुपया कांग्रेसी खा गए। आजादी के बाद से कांग्रेस ने मात्र देश को लूटने का काम किया। 60 साल तक देश में कांग्रेस की सरकार रही लेकिन देश में गरीब जनता की स्थिति पहले की भांति ही है। कांग्रेस नारा देती है कि कांग्रेस का हाथ गरीबों के साथ, लेकिन यह हाथ गरीबों का गला घोंटने में लगा है।

**फरीदाबाद**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 6 अक्टूबर को वंशवाद की राजनीति पर प्रहार करते हुए कहा कि वंशवाद की राजनीति लोकतंत्र के लिए खतरा बन गई है तथा हरियाणा को भी 25 साल के पांच वंशों की वंशवाद की राजनीति से मुक्ति दिलानी है। सत्तारूढ़ दल कांग्रेस तो डबल डिजिट तक भी पहुंच पाएगी तथा हरियाणा में पूर्ण बहुमत के साथ भाजपा की एक जवाबदेह सरकार बनेगी। श्री मोदी ने रैली को सम्बोधित करते हुए कहा कि विधानसभा चुनाव प्रचार के दूसरे चरण में प्रदेश के प्रत्येक कोने में भाजपा के पक्ष में आंधी उठ रही है तथा प्रदेश का मतदाता अपने भाग्य को बदलने को आतुर दिख रहा है। लोकसभा चुनाव में भी हरियाणा में ऐसा माहौल देखने को नहीं मिला था। आज प्रदेश में जो हालात कांग्रेस के खिलाफ बन रहे है वह उसके पापों का नतीजा है। पिछले दस वर्षों में हुड्डा सरकार ने जो लूट मचाई उससे प्रदेश तबाह हो चुका है। किसान की जमीन लूटकर उसे असहाय बना दिया है तथा हरियाणा की औद्योगिक राजधानी फरीदाबाद से उद्योग-धंधे उजड़ रहे है व युवा बेरोजगार हो रहा है। आज फरीदाबाद से लोग पलायन करने को मजबूर हो रहे है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में आदर्श चुनाव आचार संहिता लगी हुई है। बावजूद इसके हुड्डा सरकार

किसानों की भूमि को दामादजी के नाम कराने का काम कर रही है।

**कुरूक्षेत्र/हिसार**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 6 अक्टूबर को हरियाणा विधानसभा चुनावों के प्रचार अभियान के दौरान दोतरफा हमला करते हुए चौटाला परिवार और कांग्रेस पर करारा प्रहार किया और मतदाताओं से राज्य में 'बाहुबलियों' से निजात पाने के लिये भाजपा को स्पष्ट जनादेश देने का आग्रह किया जबकि राबर्ट वाड्रा के भूमि सौदे का मुद्दा उठाते हुए वंशवाद

की राजनीति को समाप्त करने की अपील की। श्री मोदी ने कहा, 'हरियाणा को बहुबलियों से निजात पाने की जरूरत है ताकि आम लोगों को सुशासन, बुजुर्गों को सम्मान और महिलाओं को सुरक्षा मिल सके।' राज्य में चुनाव प्रचार के दौरान रैलियों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि राज्य में पूर्ण बहुमत वाली सरकार ही हरियाणा को बाहुबलियों से निजात दिला पायेगी। राज्य में कांग्रेस सरकार द्वारा सोनिया गांधी के दामाद वाड्रा और डीएलएफ से जुडे भूमि सौदों को आधिकारिक तौर पर वैध करार देने की खबरों पर प्रधानमंत्री ने कहा कि चुनाव आयोग को इस पर गंभीर संज्ञान लेना चाहिए। श्री मोदी ने एक चुनाव रैली को संबोधित करते हुए कहा, 'वे (हुड्डा सरकार) जानते हैं कि चुनाव के बाद दामाद (वाड्रा) को अवैध सौदों की मंजूरी नहीं मिलेगी। इसलिए चुनाव प्रक्रिया के बीच में उन्होंने ऐसा निर्णय करने का दुस्साहस किया।'

**बरौदा**

भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री अमित शाह 5 अक्टूबर को प्रदेश की हुड्डा सरकार व पूर्व में केंद्र में रही यूपीए सरकार पर जमकर बरसे। उन्होंने कहा कि यूपीए ने 10 साल तक घोटालों के अलावा कुछ नहीं किया और हरियाणा में हुड्डा सरकार जमीनों की नीलामी करती रही। अचरज की बात तो यह है कि अब भी हरियाणा नंबर वन का नारा दिया जा रहा है। उन्होंने आंकड़ों का हवाला देकर हुड्डा के नंबर वन के दावों की पोल खोलने का प्रयास किया। गन्नौर, खरखौदा तथा बरौदा में चुनावी जनसभा को संबोधित करने पहुंचे श्री शाह ने हरियाणा में पूर्ण बहुमत से भाजपा सरकार बनवाने की अपील की। इनेलो सुप्रीमो चौटाला का नाम लेते हुए उन्होंने कहा कि अब वह जेल में शपथ लेने की बात करते हैं। ऐसे नेताओं को समाज व देश हित में सबक सिखाने की जरूरत है। श्री शाह ने आंकड़े पेश करते हुए कहा कि हरियाणा महिला सुरक्षा में 26वें पायदान पर है। साक्षरता में यह 20वें स्थान, बेरोजगारी में 18वें, ग्रामीण विकास में 13वें तथा कृषि खर्च में 18वें स्थान पर है। प्रदेश में कृषि विकास की दर मात्र तीन प्रतिशत है। फिर हुड्डा के विकास का दावा कितना सार्थक है।

**करनाल**

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 4 अक्टूबर को करनाल में आयोजित रैली में कहा कि यह चुनाव हरियाणा का भाग्य तय करेगा। उन्होंने कहा कि हरियाणा मुझे घर जैसा लगता है। श्री मोदी ने कहा कि जो लोग 60 साल में कुछ नहीं कर पाए, वे 60 दिन के मेरे काम का हिसाब मांग रहे हैं। पीएम मोदी ने कहा, हमने कैलाश मानसरोवर के लिए नया रास्ता खुलवा दिया, हम चीन को समझाने में सफल रहे। अब सड़क मार्ग से आराम से कैलाश यात्रा कर सकते हैं। श्री मोदी ने कहा कि हरियाणा सरकार बासमती चावल पैदा करने वाले किसानों की बदहाली के लिए जिम्मेदार है। उन्होंने कहा, अगर हरियाणा को आगे ले जाना है तो इसके लिए कांग्रेसमुक्त हरियाणा चाहिए, यहां पूर्ण बहुमत वाली सरकार बननी चाहिए, रुकावट वाली सरकार बनी तो मैं दिल्ली में रह जाऊंगा और हरियाणा का सही विकास नहीं हो पाएगा। श्री मोदी ने कहा कि आजकल जमाना हाई-फाई का है, वाई-फाई का है, लेकिन महत्व सफाई का भी है। श्री मोदी ने कहा कि समूचा विश्व आज भारत को बड़े सम्मान की दृष्टि से देख रहा है और यह भारत के 125 करोड़ लोगों की वजह से हुआ है, जिन्होंने केंद्र में मजबूत और स्थिर सरकार बनाई। ■

**मध्य प्रदेश**

# सबसे तीव्र विकास करने वाला बना राज्य

मध्य प्रदेश ने आर्थिक विकास में सभी प्रमुख प्रदेशों को मात दे दी है और 2013-14 में उसकी विकास दर 11 प्रतिशत पहुंच गई है। यह वर्ष वह है जिसमें सकल घरेलू उत्पाद में दूसरी बार निरंतर 5 प्रतिशत से कम रिकार्ड की गई है। यह बात उल्लेखनीय है कि मध्य प्रदेश में इतनी ऊंची विकास दर ऐसे समय में हुई है जब वर्ष के दौरान राज्य का औद्योगिक विकास घट कर कम हुआ है। कृषि वृद्धि और सेवा क्षेत्रों के विस्तार ने इसमें बहुत हद तक सहायता देकर चरम शिखर पर पहुंचा है, जब कि पिछले कुछ वर्षो से बिहार विकास चार्ट में ऊपर रहा जो अब तृतीय स्थान पर आ गया है और उत्तराखण्ड दूसरे स्थान पर पहुंच गया है।

यदि पिछले तीन वर्षो में राज्यों की विकास दरों पर विचार करें, जबकि बिहार की 11 प्रतिशत औसत विकास दर रही तो मध्य प्रदेश ने स्पष्ट ही निरंतर अपनी परफोर्मेंस के हर विगत वर्षो में सुधार किया है और इन तीन वर्षो में औसत विकास दर 10.2 प्रतिशत बनी रही है। यह वह समय रहा है जब राष्ट्रीय सकल घरेलु उत्पाद या जीडीपी की विषय स्थिति रही और इसे फिर से बहाल करना है।

तीन वर्षो की यह अवधि भी ऐसी है जिसमें उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, पंजाब और कर्नाटक जैसे राज्यों को अपनी विकास प्रोत्साहन में कमी आई है। जबकि गुजरात राज्य 8 प्रतिशत की औसत वृद्धि से निरंतर अपनाता रहा है, वहीं मध्य प्रदेश के अलावा घरेलू उत्पाद वृद्धि में तेजी से सुधार करते हुए उत्तराखण्ड, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल शामिल हैं। सीएमओ डाटा के अनुसार मध्य प्रदेश के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) में 2012-13 में 9.9 से बढ़कर निरंतर मूल्य पर दो अंकों की 11.08 प्रतिशत रजिस्टर्ड हुई है। मार्च 2014 में इसकी जीएसडीपी 2,38,530 करोड़ रुपए थी। राज्य ने 2009-10 से लेकर 9 प्रतिशत से ऊपर ठोस वृद्धि दिखाई है, जिस ऊंची वृद्धि का कारण कृषि और इससे जुड़े क्षेत्रों से है और अनुपूरक के रूप में मामूली तौर पर सेवा क्षेत्र भी हैं। इन दो क्षेत्रों में विकास दर ने राज्य की औद्योगिक परफोर्मेंस में आई सुस्ती को पूरा कर दिखाया है। राज्य का औद्योगिक क्षेत्र 2009 से कुछ कम विकास दर बना रहा है, जो 2013-14 में केवल 2.1 प्रतिशत का विस्तार हो पाया, और 2012-13 में घट कर 5.5 प्रतिशत जा पहुंचा।

भारतीय अर्थव्यवस्था की मानीटरिंग केन्द्र के अनुसार यह सभी प्रमुख राज्यों से अलग दिखाई पड़ता है, जो उनकी जीएसडीपी में कृषि तथा सम्बन्धित क्षेत्र के शेयर में पतन के रूप में देखा गया है। अब मध्य प्रदेश देश के खाद्यान्न उत्पादन में केवल उत्तर प्रदेश के बाद सबसे अधिक उपज करने के विषय में दूसरे स्थान पर आता है, जबकि अखाद्य फसलों, विशेष रूप से तिलहन में भी पर्याप्त वृद्धि देखने को मिलती है। पिछले तीन वर्षो में राज्य में अतिरिक्त सिंचाई सुविधाओं के कारण कृषि विकास को श्रेय मिला है।

2013-14 में जीडीपी- देश में उत्पादित माल और सेवा क्षेत्रों के मूल्य की मापन से- 4.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 2012-13 में अर्थव्यवस्था का विकास 4.5 प्रतिशत की गति से हुआ, जबकि ऊंची मुद्रास्फीति, ऊंचे ब्याज दर और खराब औद्योगिक क्षेत्र की वृद्धि आहत रही है। ■

## पंडित दीनदयाल उपाध्याय को नमन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयन्ती उनके मानवीय एकता मंत्र और समाज सेवा के प्रति योगदान को याद किया। 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती पर उन्हें प्रणाम। उनकी प्रेरणा और मार्गदर्शक को हम नमन करते हैं। उनका पूरा जीवन समाज सेवा के लिए समोर्पित रहा।' 'दीनदयाल जी द्वारा दिया गया मानवीय एकता का मंत्र हम सभी का मार्गदर्शन करता है।' प्रधानमंत्री ने कहा, ''हम भारत को एक विकसित देश बनाने के लिए कतार में खड़े सबसे अंतिम व्यक्ति की सेवा के दीनदयाल जी के सपने को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।''■